अथ

कनकसुंदर विरचित.

श्री हरिश्चंद्र राजानो रास.

तेने द्वितीयावृत्तिने

तेनुं

सत्यशील महात्म्य रूप जाणीने

यथामति संशोधन करी.

श्रावक जीमसिंह माणकें

॥ श्री मुंबईमां ॥

निर्णयसागर प्रेसमां छपाव्यो छे.

संवत् १९५३. सन १८९७.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

श्री वीतरागायनमः

अथ

श्री हरिचंदराजानो रास प्रारंभः

॥ दोहा ॥

॥ पास जिनेसर पाय नमी, थंभणए पुर थिरवास ॥ जुग जुगमांहें दीपतो, पूरे वांछित आश ॥ १ ॥ अदि लखे कुण एहनी, वर्ष इग्यारे लक्ष ॥ वर्णत पश्चिम देवता, कीधी पूज प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ एंसी सहस वर्ष अचल, सेवा कीधी सार ॥ वासुक विष हरता हरि, प्रभु पाता ल मझार ॥ ३ ॥ पश्चिम महोदधि पाखती, पूज्यो राजा राम ॥ सात मास नव दिवस प्रति, तेहनां सीधां काम ॥ ४ ॥ नारायण बहु दिन नम्यो, बार वरस करी पत्त ॥ द्वारिका दाह जले वशें, प्रगट्यो सायर दत्त ॥ ५ ॥ कांति न गरी प्रगटीयो, योगी नागार्जुन ॥ सेढी तट सीधो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तिहां, सोवन पुरिस रतन्न ॥ ६ ॥ वेलु अंतरें जिनवरू, रह्यो विबुरू तरु गूढ ॥ तुरत गया तस देहथी, गाली अढारे कोढ ॥ ७ ॥ त्रिजु वन पति तारण तरण, खंत्र नयर अहिठाण ॥ सकल मूरति प्रजु निरखीया, जीवत जन्म प्र माण ॥ ८ ॥ हुं शरणे आव्यो हवे, अशरण शरण जिणंद ॥ सन्निध्यकारी तुं सदा, मुझ कर परमाणंद ॥ ए ॥ मुझ मति बोटी मूढ मति, महोटा गुणशुं मोह ॥ मेरु चढे किम पांगलो, जे अति अधिक सठोह ॥ १० ॥ जक्ति शक्ति मुज उपनी, पंखीने जिम पांख ॥ तिम आवी सेवक तणे, अंधाने जिम आंख ॥ ११ ॥ बोली न जाणे बोबडो, करे तर्कीशुं वाद ॥ आ संगें जिनर मल्या, तिहां गयो संवाद ॥ १२ ॥ जन्म सफल तो जाणीयें, कहीयें, गुण सत्य वंत ॥ आगें थोडो आउखो, आलस उंघ अ नंत ॥ १३ ॥ धंधो पण बूटे नहिं, क्रोध मो हने काम ॥ कर्म सबल दल काठीया, लेण न दे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कोइ नाम ॥ १४ ॥ पण में कीधी विविध परें, श्रीजिन पास पुकार ॥ अंगथकी अलगा रह्या, बोलीस अक्षर सार ॥१५॥ धर्म विशेषें बे नला, दान शीयल तप नाव ॥ पण सहुको दाखे सही, सबलो शील प्रन्नाव ॥१६॥ शील सत्त केडे सहु, दान मान तप धर्म ॥ हवे हुं तेह वखाणशुं, में जाण्यो ए मर्म ॥१७॥ राजा हरिचंद साहसी, सती सु तारा नारि ॥ शील सत्त तेहनां चरित्र, सांन्न लजो नर नारि ॥ १८ ॥ गांठ गरथ लेखा परखें, प्रगटी हीरा खाण ॥ लाखगली कुण मोलवे, एहवो अवसर जाण ॥ १९ ॥ सुणतां अमी य समान गुण, रंजे चतुर सुजाण ॥ न्नीजे पण न्नेदे नहीं, पाणीमांहि पाषाण ॥ २० ॥ श्री न्नगवंतजी पूज्यजी, कहो वधे जिम मुज्ज ॥ मूर ख नर जाणे नही, हाहा करे अबुज्ज ॥ २१ ॥ मन संदेह म राखजो. फरि पूबजो वात ॥ कह्या विना किम जाणीयें, अंतर कथा अखात ॥ २२ ॥ आलस निद्रा परिहरो, कच पच म

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

012851
gyanmandir@kobatirth.org
करो कोय ... कीने, दूध पीयो सहु कीय ॥ २३ ॥ नवरस भेद वखाणशुं, बे मुज मन कल्लोल ॥ कनकसुंदर एक चित्तशुं, सरस कथा रंगरोल ॥ २४ ॥ नवरस नामानि ॥श्लोकः॥ शृंगारकरुणाशांता, बिभत्स भय मद्भु तं॥हास्य वीरं रसं रौद्रं, रसैतानि नवान्यपि ॥२५॥

ढाल पहेली ॥ राग केदारो ॥ असा सोदा गरकुं चलण न देशुं ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजिन त्रिभुवन मंमल माया, मध्य मा नव जन भवन वसाया ॥ सो अपरंपर अलख निरंजन, सुर नर नाग जना मन रंजण ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सोअपरंपरं० ॥ आदि पुरष श्री आदि जिणंदा, दीपे ज्योति सरूप दिणंदा ॥ ॥ सो० ॥ मीन तणा पग नीर वहंता, पंखी मारग गगन भमंता ॥ २ ॥ सो० ॥ नाद श ब्दकुं वाकी बाया, अनहद ब्रह्मंम पिंम समाया ॥ सो० ॥ आदि पुरुष परमेश्वर ऐसा, ज्योति स रूपी दीपे जैसा ॥ ३ ॥ सो० ॥ तेहनी ऋद्धिनो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पार न कोइ, जंबुद्वीप तणो विधि जोइ ॥ सो० ॥ लाख जोयण जंबू परिमाणो, वृत्ताकारें तेह व खाणो ॥ ४ ॥ सो० ॥ क्षेत्र भरत तस भीतर सोहे, पंच सया जोयण मन मोहे ॥ सो० ॥ ७ कला ने जोयण छवीसें, आगममांहे कह्यो जगदीशें ॥ ५ ॥ सो० ॥ देश बत्रीश सहस नर नारी, जल थल मानव भरत मझारी ॥सो०॥ आरज देश साडा पचवीश, धर्म कर्म सेवा जगदीश ॥ ६ ॥ सो० ॥ अवर देशमां धर्म न ध्यान, देव न पूजा दान न मान ॥ सो० ॥ सांकेत देश अयोध्या चंगी, नव बार जोयण नवरंगी ॥ ७ ॥ सो० ॥ सहस त्र्यासी त्रण सय पचवीश, गाम एहनां कह्यां जगदीश ॥ सो० ॥ सोहे देवपुरी अनुमानी, राजा हरिचंदनी राज धानी ॥ ८ ॥ सो० ॥ नगरतणो विस्तार कहेशुं, कनकसुंदर कहे सुजश लहेशुं ॥ सो० ॥ ढाल संपूर्ण कीधी पहेली, कीर्त्ति प्रगट थई जग व हेली ॥ ए ॥ सो० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल बीजी ॥ राग रामग्री ॥ शीता तो रूपें रूडी, जाणे आंबामाले सूडी हो ॥ ए देशी ॥

॥ अयोध्या अधिक विराजे, जिण आगल लंका लाजे हो ॥ नगरी नवरंगी ॥ चवडी दीर्घ च तुरंगी, तेढी त्रिकूट त्रिभंगी हो ॥ १ ॥ न० ॥ ए आंकणी ॥ लांबी शेरी विच शेरी आडी अवली अधिकेरी हो ॥ न० ॥ नर ढयल विराजे ढाजे, वलि पडहा बहुविध वाजे हो ॥ २ ॥ न० ॥ गोंखे बेठी गयगमणी, मन मोहे मृगा नयणी हो ॥ न० ॥ कपूरे करुला कीजें, रंग नरी आ लिंगन दीजेहों ॥ ३ ॥ न० ॥ गढ कोट नदी वन वाडी, दीसे उछाह दिहाडी हो ॥ न० एक वणज करे वणजारा, कर दाण न रुंरु लगारा हो ॥ ४ ॥ न० ॥ काश्मीर लाहोर अटारो, सो दागर अंत न पारो हो ॥ न० ॥ खंनायत दीप प रारा, दक्षिण गुर्जर धरारा हो ॥ ५ ॥ न० ॥ कर अकर न विकरे वराति, नरे नोग न माप मुकाती हो ॥ न० ॥ पर छिपे प्रवहण पूरे, देशांतर सा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ऊ सनूरे हो ॥ ६ ॥ न० ॥ कुसल क्षेमें घर आवे,
उत्सव करी नारी वधावे हो ॥ न० ॥ कोटीधर
माया उंभी,परदेशें पहुचे हूंभी हो ॥ ७ ॥ न० ॥
माहाजन सुखीया सुविशेषो, लाखे कोडे नही
लेखो हो ॥ न० ॥ देवल जिन हरि हर दीपे,
जाणे मंदर गिरि जीपे हो ॥ ८ ॥ न० ॥ पो
शाले धरम सुणावे, वभेरा निशाल जणावे हो ॥
॥ न० ॥ बहु होम यज्ञ ध्वनि ज्ञानी, हरिचंद
तणी राजधानी हो ॥ ए ॥ न० ॥ विप्र दीसे
वेद जणंता, हाहें होकार करंता हो ॥ न० ॥
तिहां दीन डुःखी नहिं कोई, सुखवासी लोक सहु
कोई हो ॥ १० ॥ न० ॥ ए ढाल कही इम
बीजी, सांजलीने करजो जीजी हो ॥ न० ॥
मुनि कनकसुंदरनी वाणी, सुणतां रस अमिय
समाणी हो ॥ ११ ॥ न० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नवरंगी नगरी तिहां, श्रीहरिचंद नरिंद ॥
तेज प्रतापें आगलो, दीपे जेम दिणंद ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

न्याय नाव राजा निपुण, शूर सुनट सत्यवंत ॥
मन वयणे पोषे प्रजा, वन तरु जेम वसंत ॥ २ ॥
साहसीक नूपति सबल, धरे सदा दृढ धर्म ॥
वीर विचक्षण अति चतुर, जाणे सगला मर्म ॥६॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ राग ललित रामग्री ॥ सर
णीयानी देशी ॥ चोपाइमां ॥

॥ विलसे राजा विविध प्रकार, सत्तावीश अंते
उर नारि ॥ हय गय रथ पायक परिवार, शूरवीर
नी अंत न पार ॥१॥ बीजा मणि माणिक नंमार,
रयण जेटला समुद्र मझार ॥ महोटा नृप तस
नामे शीश, इंद्र जिसो जाणे अवनीश ॥ २ ॥
सति सुतारा सुंदर नार, पटराणीशुं प्रेम अ
पार ॥ मतिसागर मंत्री मतिवंत, सामि धर्म
साचो सत्यवंत ॥ ३ ॥ सकल कला गुण मणि का
मिनी, प्राण प्रिय पीयु मनगामिनी ॥ पूर्णचंद्र
वदनी निकलंक, लघींत केसरी सम कटि लंक ॥
॥४॥ कीकी नमर कमलदल जिसी, विकसित लो
यण सोहे तिसी ॥ सूक्ष्म रेखा काजल सारी, म

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धुकर बेठा बाह पसारी ॥ ५ ॥ काने रवि कुमल फल हले, अंधकार क्षण क्षणमांहे टले ॥ को किल कंठ सरिखो झीण, मणिधर श्याम भुयंगम बेणि ॥६॥ पीन पयोधर तुंबा जिस्या, अमृत कलश बिराजे तिस्या ॥ हंस गयंद अनोपम गेलि, जाणे अभिनव मोहनवेलि ॥ ७ ॥ अधर प्र वाली हीरा दंत, पावस वीज जिसी झलकंत ॥ अधर रंग तंबोल रसाल, सति शील सीता सुवि शाल ॥ ८ ॥ रूपे रंभा लाजी रही, त्रिभुवन नारी उंपम नही ॥ देव भगति सहगुरुनी सेव, पतिव्रता धर्म धरे नित्यमेव ॥ ए ॥ राजा राणी वाक्य ॥ गाहा गूढा अरथ अपार, राग रंग गुण गीत प्रचार ॥ बोले चौबोला सुविचार, प्रत्युत्तर आपे तत्काल ॥ १० ॥ राझीसवाक्यं ॥ एकनारी अति सुंदर रूप, प्रथविमांहे अधिक अनूप ॥ चतुर तणे मनमांहे तेह, पंच सखीसुं घणो स नेह ॥ ११ ॥ उंची चढि नीची उतरे, सुर नर नाग असुर मन हरे ॥ चरण घणा पण चाले नही,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वस्त्रघणा ने उघाडी रही ॥ १२ ॥ न जमे अन्न न पीवे नीर गुह्य न राखे निपट अधीर ॥ पर न रशुं परउप गारणी,पुत्र जणे पण ब्रह्म चारिणी ॥ ॥ १३ ॥ फल लागां पण वंध्या सही, प्राण व ल्लन्न कहो ते कुण कही ॥ तिण कारण मुऊ मन संदेह, कहो प्रीतम कुण नारि तेह ॥ १४ ॥ राजवाक्यं ॥ नवमंगल रूपी ते नारि, कहीये सुख करणी संसार ॥ रमणीसुर नर रलियामणी, वारु सुंदर सोहामणी ॥ १५ ॥ लीलावंती मोहनगारी, पंच वरण धुरि अक्षर नारि ॥ एम अनेक गुणन्नेद प्रकाश, पंच विषय सुख लील विलास ॥ १६ ॥ राजा राणी विलसे, न्नोग, न्नमर केतकी जिम संयोग ॥ मनरंगें सुख लीला रमे, एक निमेष विरहो नवि खमे ॥ १७ ॥ कंत तणे मन मानी इसी, नयन मांहेलि कीकी जिसी ॥ कहे तिका विध राजा करे, जीवन प्राण जिसी आदरे ॥ १७ ॥ सोहागणि साची ते नार, जे मनमानी निज न्नरतार ॥ सबल शील जिणमांहे लही, तिणशुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रीतम विरचे नही ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ कोकिलानां स्वरं रूपं, वने रूपं तपस्वीनां ॥ विद्यारूपं कुरूपाना, नारीरूपं पतिव्रता ॥ २० ॥ चोपाइ ॥ विचविच मनराखे वैराग, शील, प्रताप घणो सोभाग ॥ दान शील तप भाव विचार, धरे धर्म मन चार प्रकार ॥ २१ ॥ आराधे अरिहंत नवकार, जीव दया जयणा सुविचार ॥ वर्जे जीव मारंता लोक, इण दृष्टांते सांभलो श्लोक ॥२२॥ यद्यद तूकांचनंमेरु,कृत्स्नांचे ववसुंधरां॥ एकस्यजिवितां दद्या, न्नच तुल्यांयुधिष्टिर ॥ २३ ॥ चोपाइ ॥ जाणे एह संसार असार, दुख अनेक तणो भंडार ॥ वीतरागनां धर्म विहीण, मुगति न पामे को मति लीण ॥ २४ ॥ साधु सुगुरु सेवा सुविशाल, पात्र दान दीजें उजमाल ॥ जन्म थयो गोवालने घरे, रुद्धि लहे शालिभद्रनी परें ॥ २५ ॥ सूधो शील मुगति दातार शील विना पामे नही पार ॥ शू लितें सिंहासन थयुं, शेठ सुदर्शन संकट गयुं ॥ ॥ २६ ॥ शील प्रताप सुभद्रा सती, चालणि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जल काढ्यो जिन मति ॥ चंपापोल उघाडी जिणे प्रह ऊठी प्रणमीजें तिणे ॥ २२ ॥ ब्राह्मी चंदनवाला मती, इत्यादिक जें शोले सती ॥ शिवपुर पद पाम्युं अभिराम पाप जाये समरंतां नाम ॥ २७ ॥ सूधो त्रिविध पांलंता शील, शिव पद अविहड लहीयें लील ॥ जंबुस्वामीने आर्द्रकुमार, कायवन्नो धन्नो अणगार ॥ २९ ॥ बार कोडी धन विलस्यो जेण, मुगति पुहुतो श्रीनंदषेण ॥ कूड कपटि लडवारी लबाड, ते नारद ऋषि पाम्यो पार ॥ ३० ॥ तप विण शिव पुर लहीयें नहीं, तप विण कर्म न तूटे कहीं ॥ जुवो हरिकेशी चंमाल, दृढप्रहारी पापी विकराल ॥ ॥ ३१ ॥ तप तपीने निर्मल थयो, कर्म खपावी मुगतें गयो ॥ भाव विना पण मुगति न होय, भाव समोवड धर्म न कोय ॥ ३२ ॥ यतः ॥ दानेन प्राप्यते लक्ष्मी,शीलेन प्राप्यतेयशः ॥ तप शाक्षीयते कर्म, भावेन मोक्षसंपदः ॥ ३३ ॥ चोपाइ ॥ वीरवंदण दर्दुर मन रंग, जातां चांप्यो च

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पल तुरंग ॥ पश्चात्ताप करे अंदोय, जिनवर दरि सण करवा मोय ॥ ३४ ॥ कर्म कठिन दर्शन नवि थयो, ध्यानधरी सुर लोकें गयो ॥ भाव धरी जो दीजे दान, तेह तणुं फल एक प्रधान ॥ ३५ ॥ भावविना तो न पले शील, अण मिलते गंगेव अहिल ॥ धन यौवन मलियो संयोग, शय्या शील सजे सुर लोक ॥ ३६ ॥ भावे तप तपियें ते खरो, भवियण भाव सदा मन धरो ॥ दान शील तप भावे करी, शीघ्रे वरीयें शिव सुंदरी ॥ ३७ ॥ इस्योभाव राणी मन वस्यो, कुंदन उपर हीरो किस्यो ॥ सुरत संभोग तणां सुख सार, नागलता चंदन भरतार ॥ ३८ ॥ इम लीनो हरिचंद, नरिंद, नारी सुतारा नयणानंद ॥ एक थंभो उंचो आवास, विलसे दंपति लील विलास ॥ ३९ ॥ राजा राणी रंग रसाल, कनक सुंदर कहे त्रीजी ढाल ॥ सुणतां रीझे चतुर सुजाण, उठी परहा जाये अयाण ॥ ४० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(दोहा)

॥ एक दिवस हरिचंद गयो, वन क्रीडा बहु सेन साधु एक महोटो महंत, बेठो दीठो तेण ॥ १ ॥ राजा पग प्रणमी करी, बेठो मुनिवर पास ॥ साधु सुणावे देशना, हरिचंद सुणे उल्लास ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ रागकाफी हुसेनी ॥

॥ निंणदी लोयणा ॥ ए देशी ॥

॥ हुख सागर संसार ए, सायर नव नारि लाल ॥ चतुरनर चेतियें ॥ काम क्रोध मद लोन ए, हु खके अधिकारी लाल ॥ १ ॥ च० ॥ मोह मि थ्यात न राचीयें, जीउ जोइ विमासी लाल ॥ ॥ च० ॥ लाख चोरांशी जीउरा, नमे योनि म झारी लाल ॥ २ ॥ च० ॥ दान शील तप नावना, ए नावे निबंधी लाल ॥ च० ॥ नवसाग रके पारकू, पामे एह प्रबंधी लाल ॥ ३ ॥ च० ॥ देव एक अरिहंत है, साधु सुगुरु सूधा लाल ॥ च० ॥ केवलि धर्म प्रकाशिया, नूपति प्रतिबुद्धा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लाल ॥ ४ ॥ च० ॥ दीधी त्रण प्रदक्षिणा, उत्त
रासण गाये लाल ॥च० ॥ मुनिवर वंदि नावशुं
निजमंदिर आये लाल ॥ ५ ॥ च० ॥ समकित
व्रत नृप आदरे, आनंद अंग न माये लाल ॥
॥ चन ॥ अंग उमंगे महीपति, मन नरम गमा
ये लाल ॥ ६ ॥ च० ॥ नेद जणाये नारिकुं, स
मकित महिमा लीने लाल ॥ च० ॥ जन्म सफल
अब जाणीयें, देही पावन कीने लाल ॥७॥च०॥
दान महीपति देत हे, अब होत वधाई लाल ॥
॥ च० ॥ घर घर गूडी उछले, निसाणे घाये
लाला ॥ ८ ॥ च० ॥ प्रथम खंरु पूरो हुवो, ह
रिचंद नरिंदा लाल ॥च०॥ परमानंदनी संपदा,
सुरलोक सुरिंदा लाल ॥ ए ॥ च० ॥ श्रीनावड
गछ नूपति, मणिरत्न मुणिंदा लाल ॥ च० ॥ स
फुरु श्रीउवझायजी, कर हुं आणंदा लाल ॥ १० ॥
॥ च० ॥ कनकसुंदर शिष्य वीनवें, प्रनु चरण प
साया लाल ॥ च० ॥ चोथी ढाल रसाल ए, शृं
गार रस गाया लाल ॥ ११ ॥ च० ॥ इति श्रीक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नकसुंदरविरचितो श्रीहरिश्चन्द्र तारालोचनि चरित्रे सत्यशीलाधिकारे नवरसवर्णन मध्ये शृं गार रस वर्णन नामा प्रथम खंरु संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय खंडप्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री सदगुरु प्रणमुं सदा, सिद्धिदाय सुविशेष॥ भावडगच्छ मुकुट मणि, श्रीउपाध्या यम हेस ॥ १ ॥ हवे बीजो खंरु बोलशुं, हरिचंद सत्य अधिकार ॥ विरहागम विक्रय करय, राणी राज कुमार ॥ २ ॥ इणे अवसर सुरलोकमें, सभायें बेठो इंद्र ॥ एम भाखे नर लोकमें, सबल सत्य हरिचंद ॥ ३ ॥ शूरवीर अति साहसी, दीसे राजा सोय ॥ आजतणे वारे तिहां, अवर न दीसे कोय ॥ ४ ॥ मिथ्यात्वी माने नही, इंद्रवचन सुर एक ॥ मुज आगल कुण मानवी, राखे निश्चल टेक ॥ ५ ॥ पूरवभव संतापीया, विण अपराधे साध ॥ वैर संभाखुं आपणुं, देशें दुःख अगाध ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल पहेली ॥ राग केदारो ॥ नरेसर जेव्यो साहस धीर ॥ ए देशी ॥

॥ देव परीक्षा आवियोजी, मानव लोक म झार ॥ अयोध्यानी पाखतीजी, बाग रच्यो वि स्तार ॥ १ ॥ महिपति वीनतडी अवधार ॥ ए आंकणी ॥ कर जोडी तापस कहे जी दुःख अ मारां वार ॥ २ ॥ महिपतिवी० ॥ तापस ब हुविध उतर्या जी, तापसणि परिवार ॥ जटाजूट ते जंगमी जी, साथें शिष्य अपार ॥ ४ ॥ म० ॥ एकदिन तापस आवीयो जी राजसभा मन रंग ॥ नृप आगल उभो रह्योजी, उलट आणी अंग ॥ ४ ॥ म० ॥ राय करे तस वंदनाजी, दीधुं आदर मान ॥ दीन वचन ऋषि वीनवे जी, सुण हरिश्चंद्र राजान ॥ ५ ॥ म० ॥ अविचल छत्र तु मारडो जी, तुं छे प्रजा सुखकार ॥ तेजे सूरज सारि खो जी, दाने जिस्यो जलधार ॥ ६ ॥ म० ॥ ता पस बहु परदेशना जी, वस्या तुमारे वास ॥ महोटो राजा तुं सही जी, वैरी जाये नाशि ॥ ७ ॥ म० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सघली वाते सोहिलो जी, तापस दे आशीष ॥
सूअर एक अमारडेजी, अरि सबलो अवनीश ॥
॥ ८ ॥ म० ॥ मारि ताडि दूरें करोजी, माख्या
तापस चार ॥ नव तापसिणी संहरी जी, दशमि
महारी नार ॥ ए ॥ म० ॥ वारु राये वीनव्यो
जी, तेहने दीधी शीख ॥ जे तुमने नित्य दुह
वेजी, तेहने हुं उलीख ॥ १० ॥ म० ॥ तापस
आश्रम आवियोजी, राय चढ्यो ततकाल ॥ ते व
नमांहि आवियो, चतुरंग दल भूपाल ॥ ११ ॥
॥ म० ॥ दीठो सूवर दोडतो जी, भरि करि मूक्यो
बाण ॥ गरज सहित हरणी हणी जी, चिंता
पडि असमाण ॥ १२ ॥ म० ॥ पहिली केदारा
तणीजी, दाखी ढाल रसाल ॥ कनकसुंदर मन
रंजिया जी, सांभलि बाल गोपाल ॥ १३ ॥ म० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्रिप्रत्यें राजा कहे, मतिसागर सुण वात ॥
में पातक महोटुं कियुं, अधर्मनो अवदात ॥
॥ १ ॥ ए पातक किम छूटशे, कीधुं खोटुं का

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

म ॥ अरति परति हास्या विना, नरके नही मुऊ ठाम ॥ २ ॥ अपराधि मुऊ सारिखो, अवर नही जग कोय ॥ कर्म सबल मुऊिं शिर चढ्युं, किम निस्तारो होय ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ राग गोडी ॥ मनञ्ज मरारे ॥ ए देशी ॥

॥ राजा हरिश्चंद्र चिंतवे, मे कीधो रे ॥ मारी अबला बाल, पाप में लीधो रे ॥ हुं अपराधी पापियो. मेंं० ॥ जन्म थयो विसराल ॥ १ ॥ पा० ॥ हिरण एकलो विलविले ॥ में० ॥ देशे मोहे शाप ॥ पा० ॥ जे गति ए बिहुं जीवनी ॥ में० ॥ सो गति करशुं आप ॥ पा० ॥ २ ॥ तापस आयो दोडतो ॥ में० ॥ हरणी मारी केण ॥ पा० ॥ ञस्म करुं नरकें धरुं ॥ मे० ॥ विंधी मृगली जेण ॥ ॥ पा० ॥ ३ ॥ हरिश्चंद्र पायलागी कहे ॥ में० ॥ सबलुं पाप अघोर ॥ पा० ॥ जे विध दाखो ते करुं ॥ में० ॥ केहो कीजें सोर ॥ ४ ॥ पा० ॥ धूजे राजा धडहडे ॥ मे० ॥ हाहाकरे हरिश्चंद्र ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पा० ॥ बिहुं आंखे आंसु झरे ॥ मे० ॥ नामे शीश नरिंद ॥ ५ ॥ पा० ॥ राज समर्पुं माहरुं ॥ ॥ मे० ॥ हुं जाउं एकपोत ॥ पा० ॥ अंग करो मुझ निर्मलो ॥ मे० ॥ दूर निवारो ढोत ॥ ६ ॥ ॥ पा० ॥ चेलो गुरुने वीनवे ॥ मे० ॥ वचन सुणो ऋषिराज ॥ पा० ॥ पाप उतारो एहनुं ॥ ॥ में० ॥ आपे सहु ऋद्धिराज ॥ ७ ॥ पा० ॥ राज दीयो तापस भणी ॥ मे० ॥ शिष्य बोल्यो वलि एक ॥ पा० ॥ माहारी हरणी किणे हणी ॥ ॥ में० ॥ प्रज्वालुं सुविवेक ॥ ८ ॥ पा० ॥ राय मनावें तेहने ॥ में० ॥ देशुं लाख दिनार ॥ पा० ॥ खस्ति भणावी एटले ॥ में० ॥ है है कर्म विकार ॥ ए ॥ पा० ॥ मंदिर राजा आवियो ॥ मे० ॥ बारीमांहे होय ॥ पा० ॥ राजा हरिचंद्र शुं कियो ॥ में० ॥ लोक कहे सहु कोय ॥ १० ॥ पा० ॥ पट राणी पासें गयो ॥ में० ॥ उभी आगल आइ ॥ पा० ॥ नारी सुतारा वीनवे ॥ में० ॥ प्रीतम चिंता कांइ ॥ पा० ॥ ११ ॥ चिंता सायर जेटली ॥ में० ॥ सुंदरि सां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जल वात ॥ पा० ॥ राजऋधि उदकी करी ॥ मे० ॥ कीधो निर्मल गात्त ॥ १२ ॥ पा० ॥ मारि सगर्भा हरिणढी ॥ मे० ॥ पाप कीयो परिहार ॥ पा० ॥ दंम कीयो शिर माहरे ॥ मे० ॥ एक लाख दिनार ॥ पा० ॥ १३ ॥ बीजी ढाल पूरी कही ॥ मे० ॥ गोडी राग मझार ॥ पा० ॥ कनकसुंदर मुनि वीनवे, ॥ मे० ॥ सत्यवादि सुखकार ॥ १४ ॥ पा० ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ राग सारंग मल्हार ॥

॥ नणदलनी देशी ॥

॥ नारि सुतारा वीनवे, सांजल प्राण आधा रहो ॥ प्रीतम ॥ चिंता कीसी मनमें करो, केहना धन जंमार हो ॥ १ ॥ प्री० ॥ चिं० ॥ पाप गमायुं आपणुं निर्मल कीधुं अंग हो ॥ प्री० ॥ देशां तर हवे साधशुं, अंग धरी उछरंग हो ॥ प्री० ॥ ॥ २ ॥ जे शूरा अति साहसी, जे साचा सत्यवंत हो ॥ प्री० ॥ देशांतर तेहने किस्या, पग पग सुख अनंत हो ॥ ३ ॥ प्री० ॥ जन्म कृतारथ जाणीयें, जे पातक वरजीत हो ॥ प्री० ॥ सत्य

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

साहस चूके नही, तेहने केइ चिंत हो ॥ ४ ॥
॥ प्री० ॥ त्रीजी ढाल सोहामणी, राग सारंग म
ल्हार हो ॥ प्री० ॥ कनकसुंदर नृप धीर दे, राणी
निज जरतार हो ॥ प्री० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तापस आव्यो एटले राजजवन तिणि
वार ॥ रे रे पापी माहरा, दे तुं लाख दिनार ॥
॥ १ ॥ रायें मंत्रीश्वर तेडियो, बोल्यो एहवी जा
ख ॥ काढो धन जंमारथी, आपो एहने लाख ॥
॥ २ ॥ तापस त्रटकी बोलीयो, रिद्धि अमारी
एह ॥ ए मांहेशुं ताहरुं, तुं मुऊ आपे जेह ॥ ३ ॥
तव राजा नगरी तणो, तेडी माहाजन पास ॥
बे कर जोडी वीनवे, हरिश्चंद्र वचन विकास ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग सिंधु ॥ चरणाली
चामुमारण चढे ॥ ए देशी ॥

॥ माहाजनशुं राजा वीनवे, वचन सुणो सुवि
चारो रे ॥ में तुमने कदि दूहव्या, तो दाखो इणि
वारो रे ॥ १ ॥ मा० ॥ हो में तो दाण दंरू कीयो नही,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

न दीयुं कूडुं आलो रे ॥ पुत्रतणी परें पालतो, करतो सहुनी संभालो रे ॥ २ ॥ मा० ॥ हो में दीठी अणदीठी करी, सुणी करी असुणी जाणो रे ॥ चोलणि चालणि परहरि, में न्याय कियो निर्वाणो रे ॥ ३ ॥ मा० ॥ ज्युं वन तरुवर पांगरे, आयो मास वसंतो रे ॥ त्युं सघली प्रजा माहरी, मुझ बेठां विकसंतो रे ॥ ४ ॥ मा० ॥ ज्युं तरुवर सीचे सदा, माली अरहट नीरो रे ॥ त्युं तुमनें हुं सींचतो. प्रेम नयन जलधारो रे ॥ ॥ ५ ॥ मा० ॥ हो तापस पण धरमातमा, में ते हने सोंप्यो राजो रे ॥ लाख महोर व्याजें करी, द्यो मुझने तुमें आजो रे ॥ ६ ॥ मा० ॥ ढाल कही चोथी जलो, नीको सिंधु रागो रे ॥ कन कसुंदर माहाजन कहे, हवे राय तणो कुण लागो रे ॥ ७ ॥ मा० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुण राजा महाजन कहे, द्रव्य नहिं अम पास ॥ लाख महोर किम संपजे, अवसर इणे विमा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स॥ १ ॥ वलतो नृप बोले नही, हार्यो वचन नरिंद ॥ गयो माहाजन फरी ने सहु, एह करम हरिचंद ॥२॥ दिन पहिड्यां पहिडी सहु, लोक माहाजन मित्त ॥ पटराणी पहिडी नही, एहिज रूडी रीत ॥३॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग केदारो चंद्रावलानी देशी॥

॥ राजा हरिचंद्र वीनवे रे, सुणो तापस मुझ वात॥एकज महिने आपशुं रे, लाख महोर विख्यात ॥ १ ॥ लाख महोर आणी ने देशुं, जे न कीया ते काज करेशुं ॥ देशांतर इणिवार चलेशुं, जसिं गण तुमचा थायेशुं ॥२॥ जी राजेसरजी रे, हरिचंद राजा साहसी रे विनयी ज्ञानी जाण ॥ तव तेणेही तापसे रे, वचन कीयो परिमाण ॥३॥ वचन कीयो परिमाण जिवा रे, चाल्यो श्रीहरिचंद तिवारें ॥ सत्य कर्म मन मांहि विचारे, नारि सुतारा आइ लारें ॥ जीजी वनजीजी रे॥ ४ ॥ जीवन प्राण आधार, वाल्हिम माहरारे ॥ पाय न छोडुं आज, प्रीतम ताहरारे ॥ ५ ॥ पायन छोडुं ताहरारे, आवीश ताहरे साथ ॥ विरह लगार सहू नहीरे, विलगी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रीतम हाथ ॥ ६ ॥ विलगी रही निज प्रीतम हाथें, स्वामि मयाकरि तेडो साथें ॥ हुं हजूर रहेशुं दिन रातें, विपत पाडुं नही बीजी वातें ॥ ॥ ७ ॥ जी प्रीतमजीजी रे ॥ जीप्रीतम आधार, हार हीया तणारे ॥ अंगतणा सिणगार, सलूणा साजणा रे ॥ ८ ॥ सयण सलूणे साहिबेरे, निरखि सलुणी नयण ॥ तब तापस आव्यो तिहांरे, बोले एहवां वयण ॥ ए ॥ तापस वयण कहे अविचारी,वेगे आणो महोर हमारी ॥ साथें जाण न देसुं नारी, राजरमणी ऋद्धि सहु हारी ॥ ॥ १० ॥ जीराजेसर जी रे, जीराजेसर राय ॥ मंत्रि कहे सही रे, परनारि कुण लाग, जावा द्यो नही रे ॥ ११ ॥ जाण न द्यो परनारिने रे, ए तुम नही आचार ॥ राणा पण दंडे घणो रे, पण न लीये पर नारि ॥ १२ ॥ पण न लीये परनारिने कोइ, एह अखत्रि किहां नवी होइ ॥ तापस हीए विमासी जोइ, मतिसागर दाखे इम सोइ ॥ ॥ १३ ॥ जीराजेसर जी, जीराजेसर राय ॥ ता

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पस कोपीयो रे, मंत्रि कह्यो शुक पंखि ॥ उ डीने गयो रे ॥ १४ ॥ मंत्रीसर उडी गयो रे, धूज्यो राजा ताम ॥ आगल बोलुं नहीं रे, दीठां एहनां काम ॥ १५ ॥ दीठां एहनां काम सवाया, राज ऋद्धि रमणी धन माया ॥ राखो मुनि वरजे मन नाया ॥ कनकसुंदर एह वचन सुणाया, जी राजेसर जी रे ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तापस जावा दे नही, राणी रहे न लगार ॥ विलवंती इम वीनवे, सुणहो प्राण आधार ॥ १ ॥

॥ ढाल छठी ॥ राग सोरठी ॥ पीयारे हो वालेसर रामजी ॥ ए देशी ॥

॥ वीनवे तारा लोचनीरे. सांभल प्राण पी यार ॥ विण अवगुण मुज वालहारे, कांइ छोडो निरधार ॥ १ ॥ रंगीला हो राजिंद हरिचंदजी, निरधारीहो वालेसर क्युं तजी ॥ छोडि न जाये हो. नितुर न थाये हो, दिलतो सूरजी ॥ २ ॥ रं० ॥ ए आंकणी ॥ तुं मुज जीवन जीवनो जी, तुं ही

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

यडानो हार ॥ सोजागी शिर सेहरो रे, अंग तणो शणगार ॥ ३ ॥ रं० ॥ तुं मुऊ निमेष न वीसरें रे, ज्युं जल मीन जपंत ॥ तडफि मरुं हुं तुज विना रे, कमल नयण सुणि कंत ॥ ४ ॥ रं० ॥ लोटी जरि आगें धरुं रे, हुं छउं तोरि दास ॥ किण आगल उभी रहुं रे, वालम हियडे विमास॥ ॥ ५ ॥ रं० ॥ महेर करी मन मोहनां रे, मुऊने तेडो साथ ॥ आगल करीय पधारजो रे, हित करी जाली हाथ ॥ ६ ॥ रं० ॥ हुं अरधंगी ताहरी रे, तुं मुऊ जीवन प्राण ॥ अंगतणी छाया समी रे, सांजल कंत सुजाण ॥ ७ ॥ रं० ॥ दीयर परघर सासरो रे, सवि उऊड मुऊ मन्न ॥ जो तुम संग सदा रहुं रे, तो वेलावल रन्न ॥८॥रं०॥ शील रहे किम माहरो रे, वेडमें वसतां वास ॥ वली ए तापस पापीयो रे, करशे शील विनास ॥ ए ॥ रं० ॥ प्राण हडे पण नां हडे रे, शील रयण समतोल ॥ एक शील नग उपरें रे, सहस तापस ह्यो मोल॥ ॥१०॥ रंग० ॥ तुम वेचे विक्रय करुं रे, तुज मारे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मरीजाउं ॥ वारि सहस हुं वारणा रे, नहीं तुम मीणे नाम ॥ ११ ॥ रं० ॥ हुं नहीं छोडुं साहिबा रे, चरण कमल तुम वास ॥ सन्मुख जुवो सुंदरी रे, उन्नी करे अरदास ॥ १२ ॥ रं० ॥ चंद्र मुखी इम वीनवे रे, वलि वलि अबला बाल ॥ तन मन तारालोचनी रें, प्रियशुं प्रीति रसाल ॥ ॥ १३ ॥ रं० ॥ केसरि लंकी कामिनी रे, मृग नयणी मूंझाय ॥ उन्नीथी घर आंगणे रे, धरणी ढलि ध्रसकाय ॥ १४ ॥ रं० ॥ शीतल नीरे सुंदरी रे, छांटयुं सतप शरीर ॥ दासी कर ग्रही वींजणो रे, लावे शीत समीर ॥ १५ ॥ रं० ॥ चंदन लेपन बावना रे, उन्नी करिय सचेत ॥ प्रीय मुख देखी पदमणी रे, नीर झरे मृगनेत्र ॥ १६ ॥ रं० ॥ ढाल बीजे खंमें कही रे, छठी सोरठ राग ॥ सुणतां जोगी सुख लहे रे, वैरागी वैराग ॥ १७ ॥ रं० ॥

॥ दोहा ॥

कुंतल सेवक नृप तणो, तापसने कहे वात ॥ रे पापी तापस नही, अधम तणा अ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वदात ॥ १ ॥ पुत्र विछोहो मातनो, नारि वि छोहो कंत ॥ अघ अघोर ए किम मिटे, जां शशि सूर तपंत ॥ २ ॥ तव तापस कोपे चढ्यो, कुं तल कीधो शीयाल ॥ वडवडतो रणमें गयो, चित्त चमक्यो नृपाल ॥ ३ ॥

॥ ढा सातमी ॥ राग आशावरी सिंधु ॥
प्रणमीपास जिणंद परधान ए देशी ॥

॥ रायकहे सांभल ऋषिराया, राज रमणी राणी धन माया ॥ राखो जे तुम आवे दाया, कांहि कीजे कोप कसाया ॥ १ ॥ नारि सुताराछे शी लवंती, माहरे मन मानेती महंती ॥ ब्राह्मी उ पम अधिक लहंति, कूड कपट न कोइ कहंती ॥ ॥ २ ॥ सूरज पश्चिम दिशिजो ऊगे, पांगलो मेरु शिखरने पूगे ॥ महा उदधि मरजादा मूके, सति सुतारा शील न चूके ॥ ३ ॥ गिरि शिर कमल तणो वन होइ, माखण काढे नीर विलोइ ॥ पाणी मांहे अग्नि जो लागे, सती तणुं व्रत किमही न भागे ॥ ४ ॥ मेरु शिखर ध्रू चले कदापि, खर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बोले षटराग आलापी ॥ क्षमावंत मुनिवर पण कोपे, नारि सुतारा शील न लोपे ॥ ५ ॥ जैसी कोमल कांब कणेरी, जैसी कुंपल पीपल केरी ॥ जैसी मीणनी पुतली जाणो, तैसी कोमल नारि वखाणो ॥ ६ ॥ ए नारी मुख बोली न जाणे, ए नारी मन गर्व नआणे ॥ ए नारी मन मत्सर नांही, दयावंत ए छे मन मांही ॥७॥ ए हने में न दीयोरे कारो, सुपनेही न कह्यो जी कारो ॥ वचन कठोर न में बोलाइ, रीसाणी क्षण मांहें मनाइ ॥ ८ ॥ एहने मुनिवर गाल म देजो, धर्म सुता ते करिने लेजो ॥ रांधण इंधण काम म देजो, शीलतणा एहना गुण लेजो ॥९॥ ए मुज जीवन सम जाणेजो, एहने कठिन वचन मत कहेजो ॥ ए पासें म अणावशो पाणी, अति सुकमाल आठे ए राणी ॥ १० ॥ रोहीताश्वशुं ध रजो रंग, जणशे पंडित चेला संग ॥ वांछित मीठा मोदक देशो, बालक आपणुं करि जाणेजो ॥ ॥ ११ ॥ टाकर कांब पाटु मत मारो, जेमारे ते

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हित करी वारो ॥ चेलाने तुमे कहेजो सामी, मत लडशो इणशुं अजिरामी ॥ १२ ॥ हितकारी फेरी माथें हाथ, जणावजो लघु छुल्लक साथ ॥ अ कल प्रमाणे सूत्र जणाजो, वेद पूराण वखाण सु णाजो ॥ १३ ॥ मत दूहवशो मत रीसाशो, कु मया करी अविनय मकराशो ॥ घणुं घणुं तुमने शुं कहीयें, जला बूरा पण जे निर्वहीयें ॥ १४ ॥ महोटा मनमें कोप न आणे, महोटा शत्रु मित्र सम जाणे ॥ तुमेढो तापस दीन दयाल, तुमेढो तापस परम कृपाल ॥ १५ ॥ तुमे ढो तापस खीर मुणिंद, तुमे ढो तापस दीनदिणंद ॥ तुमे ढो तापस तप साधन्न, तुमे ढो देव जिस्या महारे मन्न ॥१६॥ तुमे ढो तापस करुणागेह, तुमे ढो तापस ब्रह्मा देह ॥ तुमे ढो तापस परम पुनीत, तुमे ढो तापस अकल अजीत ॥ १७ ॥ में मृगली निरपराध वि राधि, हुं पापी सबलो अपराधि ॥ इम कही राजा आघो चाल्यो, मन पांखे मेलीने हाल्यो ॥ ॥ १८ ॥ दुर्वासा तापसें बोलायो, दोडी राजा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाछो आयो ॥ नारी पुत्र दीया तस बेइ, राजा ह
रिचंद साथें लेइ ॥ १९ ॥ राजा मनमां गाढो
रंज्यो, मननो भरम तिवारे भंज्यो ॥ सुंदरि सुत
स्वामी ससनेह, सुकृत खेति वुठ्यों मेह ॥ २० ॥
उंघ्याने पाथरियें तलाइ, अमलियाने अमल ख
वाइ ॥ भूख्या नरने खीर जिमाइ, तरस्यो नीर
पीये सुखदायी ॥२१॥ भमरें लाध्यो कमलनो वन्न,
तिम उलस्युं हरिचंदनुं मन्न ॥ पगपंथे चाल्या प
रदेश, आव्यो उजल वेडि नरेश ॥ २२ ॥ लोक
नगरना हाहा करता, उन्ना मूक्या आंसु झरता ॥
कर्म करे ते सत्य विचार सुखने दुःख ते कर्मनी
लार ॥ २३ ॥ बीजो खंम थयो संपूर्ण, हरिचंद
नृपनो दुःख अंकूरण ॥ वनवासें राजा परवर्त्यो,
सुंदरी सहित गहन संचर्त्यो ॥ २४ ॥ त्रीजे खंम क
हिश अधिकार, कठिन कर्मगति एह विचार ॥
साते ढाल रसाल वखाणी, सुणतां प्रतिबूझे उ
त्तम प्राणी ॥ २५ ॥ श्रीज्ञावड गछ कमलदिणंद,
तस गुरुश्री मणि रत्नमुणिंद ॥ आशित लब्धि अ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नंत उवझाय, कनकसुंदर कहे तास पसाय ॥ ॥२६॥ इति श्री कनकसुंदरगणि विरचिते शील त्वाधिकारे नवरसवरणने करुणरसवर्णन नामा द्वितीयःखंडःसंपूर्णः ॥

॥ अथ तृतीय खंडप्रारंभः ॥

(दोहा)

॥ हवे त्रीजे खंडें प्रणमुं,सान्निध्यकारी देव ॥ सद्गुरुने श्रीशारदा, सहसकिरण प्रणमेव ॥ १ ॥ राजऋद्धि रमणी सुता, देश हुउं परदेश ॥ अल हाणा वनमे चल्या, श्रीहरिचंद नरेश ॥ २ ॥ जे दिन दत्त न आपणो, ते दिन मित्त न कोय ॥ कमलनदीने बाहिरो, दिणयर वैरी होय ॥ ३ ॥ राणी पग लोही झरे, पन्नर खूचे पाय ॥ चरण सकोमल कमल दल, चंद्रवदन कुमलाय ॥४॥ हो प्रीतम हो वालहा, हो तन जीवन प्राण ॥ खिण एक ठाया विसमो, सांजल कंत सुजाण ॥ ५ ॥ करशुं कर ग्रहि कामिनी, कांधे करी रोहिताश ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विशामो क्षण क्षण विचें, चाले लील विलास ॥
॥ ६ ॥ दुःख म करे गजगामिनि, मृगनयणी मन
मांहि ॥ सुख दुःख बेहु सारिखां, निबंध पल
टे नांहि ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग केदारो विरहि मल्हार ॥
आज विमलगिरि भेटशुंहो सहीयर, आ
दीसर जिनराय ॥ ए देशी ॥

॥ हरिचंद मनमांहिं चिंतवे हो, आतम ॥ कर्म
न छूटे कोय ॥ दुःख नवि धरिये सांभलो हो, आ
तम ॥ कर्म करे तेम होय ॥ १ ॥ दोष न दीजे
कोइने हो ॥ आ० ॥ कर्म विटंबन हार ॥ कर्म
रुलावे जीवनें हो ॥ आ० ॥ भवभव दुःख अपा
र ॥ २ ॥ कर्म प्रमाणे पामशे हो ॥ आ० ॥ ल
खमण बंधव राम ॥ सीता रावण लइजशे हो ॥
॥ आ० ॥ कर्मतणा ए काम ॥ ३ ॥ कर्म प्रमाणे
नीपजे हो ॥ आ० ॥ क्षेत्रें वाव्युं धान ॥ काने
खीला ठोकीया हो ॥ आ० ॥ नवि छूट्या वर्द्ध
मान ॥४॥ कर्म तणी गति एहवी हो ॥ आ० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मुक्ति सजीवन दान ॥ सुर नर कर्मे विडंबीया हो ॥ आ० ॥ तोहुं केहे ग्यान ॥ ५ ॥ आगल आवी चालतां हो ॥ आ० ॥ गंगा नदी असराल ॥ दूध सरीसो उज्ज्वलो हो ॥ आ० ॥ जल जेहवो सुविशाल ॥ ६ ॥ हंस विराजे पांखती हो ॥ ॥ आ० ॥ नीर हीलोले जाय ॥ शुक बक पंखी सारिका हो ॥ आ० ॥ बेठा केलि कराय ॥७॥ तट आवीने ऊतर्या हो ॥आ०॥ बहुविध पूरित दुःख ॥ बालक सोहग सुंदरु हो ॥ आ० ॥ तेहनें लागी भूख ॥ ८ ॥ आडो मांकें आवटे हो ॥आ०॥ रोवे रीशे सोय ॥ सहेजे ढोरू एहवां हो ॥आ०॥ मरम न जाणे कोय ॥ए॥ यतः ॥ राजा वेश्या यमोवन्हिः ॥ प्राघूर्णो बालयाचकः ॥ परपीडां न जानाति, अष्टमोग्रामकोटकः ॥ १० ॥ ढाल पूर्वली ॥ माय समझावे पुत्रने हो ॥ आ० ॥ रोय म राजकुमार ॥ ढाल प्रथम मुनि वीनवे हो ॥ आ० ॥ राग भले केदार ॥ ११ ॥ गंग विमल दल दंपती हो ॥ आ० ॥ आस्थान कीयो सुत्रि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चार ॥ थाक उतार्यो आपणो हो ॥ आ० ॥ क
नक सुंदर सत्यधार ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बालक रोवे रडवडे, आकुल व्याकुल होय ॥
नान्हडीयो भूख्यो घणुं, सात वर्षनो सोय ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ राग गोडी ॥ नथ गई मेरी
नथ गई ॥ ए देशी ॥

॥ लाडुदे मोने लाडुदे, लाडुदे माता लाडुदे ॥
लाडुदे मोने पेंडा दे, गुंदपाक गुंदवडां दे ॥ १ ॥
॥ मो० ॥ मुरकी मांमा मोतीचूर, लुंची लापसी
घेवर पूर ॥ मो० ॥ खाजां ताजां वेग अणाव, झ
रहरती सी जलेबी लाव ॥ मो० ॥ २ ॥ सेव सुहा
लीने सत पूडी, दालीना लाडु दे मावडी ॥ मो० ॥ मग
दल मीठा कोहोला पाक, कीटीना लाडु दे आप
॥ मो० ॥ ३ ॥ षट्रस आणी दे रे समी, सरस
मिठाई अमृत समी ॥ मो० ॥ फीणी नुखती सी
रा तूत, चारोली नालेर मागे पूत ॥ मो० ॥ ४ ॥
साल दालने सूरहां घीह, जीमावो मोने माताजी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

य ॥ मो० ॥ तलिया पापड साकर खीर, दे माता अब म कर बधीर ॥ मो० ॥ ५ ॥ साकर, नेली सीखरणी दही, लवंग एलची आणो सही ॥ बालक वचन सुणी माय बाप, राजा राणी फूरे आप ॥ मो० ॥ ६ ॥ किसुं संतापे पूत्र आबुफ, लाडु किहांथी आपुं तुफ ॥ मो० ॥ बीजी ढाल ए श्रावक सुणो, हठ न बूटे बालक तणो ॥मो०॥७॥

॥ दोहा ॥

॥ माता बालकने कहे, नेडो दीसे गाम ॥ तिहां जइ लावी आपशुं, धीर धरो वत्स ताम ॥ ॥ १ ॥ माता संपति क्युं मिटी, दशा घटी किम आज ॥ किहां जास्यां करस्यां किस्युं, किहां अ योध्या राज ॥ २ ॥ बेटा बोलीजें नही, करम करे ते प्रमाण ॥ तुज पिताना पुण्यथी, थाशे जय कल्याण ॥ ३ ॥ बालक बत्रीश लक्षणो, मान्युं वचन प्रमाण ॥ वलतो अणबोल्यो रह्यो, सम ज्यो चतुर सुजाण ॥ ४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल त्रीजी ॥ अहो ऊरमर वरसे मेहके नीजे चुंदडी रे केनी० ॥ ए देशी ॥

॥ अहो तिण अवसर तिहां एक के, आवी मोकरी रे के ॥ आवी० ॥ मोदक नरीयो माट के, संबल शिर धरी रे के ॥ सं० ॥ धूजें कंपे शरीर के, नजर नही तिसी रे के ॥ नि० ॥ ओढण धवलो वेश के, देवी हुए जिसी रे के ॥ दे० ॥ १ ॥ मुखे एहवी वाणि के, ते देवी वदे रे के ॥ ते० ॥ अयोध्यानो पंथके, कोइक दाखवे रे के ॥ को० ॥ देखावे को इ मार्ग के, मावो जीमणो रे के ॥ मा० ॥ एह करे उपगार के, खेउं तस नामणो रे के ॥ खेउं० ॥ २ ॥ उठ्यो श्रीहरिचंदके, बोल्यो आवीने रे के ॥ बो० ॥ कर ग्रही आणी तास के, पंथ बतावीने रे के ॥ पं० ॥ राजा हरीचंद पास के, बेठी मोकरी रे के ॥ बे० ॥ धरती नजर निढाड के, जोवे हित धरी रे के ॥ जो० ॥ ३ ॥ रे बेटा हरिचंदके, क्युं बेठो इहां रे के ॥ क्युं० ॥ वहु सुतारा नारि के, ते पण छे किहां रे के ॥ ते० ॥ ए बेठी मुज पूठ के, निरखो मात

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जी रे के ॥ नि० ॥ पटराणी ततकालके, मनमां उ
लजी रे के ॥ म० ॥ ४ ॥ राज रुद्धि सब छोडीके,
वनमें क्युं रह्या रे के ॥ व० ॥ उजड वेडि मझार के,
बेसी क्युं रह्या रे के ॥ बे० ॥ कर्म तणी गती मात
के, मांमीने कही रे के ॥ मां० ॥ रोवा लागी ताम
के, मोसी लहबही रे के ॥ मो० ॥ ५ ॥ दुःख
म करजो पुत्र के, सहु थाशे नलो रे के ॥ स० ॥
नोगवशो कृतकर्मके, हजीय छे केटलुं रे के
॥ ह० ॥ रोवे क्युं रोहिताश्वके, बेटो नूखीयो रे
के ॥ बे० ॥ मोदक नरीयो माटके, आगल मू
कीयो रे के ॥ आ० ॥ ६ ॥ बालक ते सुकमाल
के, गाढो रंजीयो रे के ॥ गा० ॥ देवी थइ अंत
रिक्षके, दुःख तस नंजीयो रे के ॥ दु० ॥ त्रीजी
ढाल रसाल के, कनकसुंदर कहे रे के ॥ क० ॥
सांनली चतुर सुजाणके, मनमें गहगहे रे के ॥७॥

॥ दोहा ॥

॥ सान्निध्य शासन देवता, एम, कीधि इणिवार ॥
राजा राणी चालियां, तिहां थकी तिणिवार ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दिन दश मारग चालतां, आयो नगर उदार ॥
काशी नामें परगडो, नव जोयण विस्तार ॥ २ ॥
सुंदर मंदिर मालियां, एक थंभा आवास ॥ देह
रामां हरिचंद गयो, रयनि निद्रा निवास ॥ ३ ॥
पंथीडा देवल शरण, के सरवरकी पाल ॥ पंथी
होवे दयामणा, जिम जिम पडे वयाल ॥ ४ ॥
राजा राणी रंग भरे, सुतां मंरुपमांहीं ॥ ऊबकें
राजा जागयो, दुःख सव्यो मनमांहीं ॥ ५ ॥
दुःखको पालण दे सखी, जो निश्वास न हुंत ॥
हीयडो वेडि तलाव ज्युं, फुटि दह दिशि जंत
॥६॥ निःपुरातन गेहिनी, सो किम नावत रात ॥
चित्त नवल धन देखीने झाखि फिरफिर जात
॥ ७ ॥ नींद न घडी एक नीपजे, कहीस मन
कवणाह ॥ अधिक सनेही बहु रुणी, वयर खटुं
कत ज्यांह ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग केदारो गोडी ॥ काम
णी काया वीनवे रेहां ॥ ए देशी ॥

॥ हवे राजा दुःख सालियो रे हां, रोवा लागो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जाम ॥ मेरेजीउरा ॥ हिवे मोकुं किस्या जीवणा रे ह, कर्म कमाया काम ॥१॥ मे० ॥ सत्य गयो तब क्या रह्यो रे हां, प्राणगयां परमाण ॥ मे० ॥ सत्य न चूकुं आपणो रे हां, तो जीव्युं दुनियां न ॥ २ ॥ मे० ॥ अवधि करी एक मासनी रेहां पख बोलायो एक ॥ मे० ॥ लाख मोहर किम संपजे रे हां, टलती देखुं टेक ॥ ३ ॥ मे० ॥ जरि आवे जातीजरी रेहां, लेतो श्वास प्रकास ॥ मे० ॥ बहु दुःखे पूरयो नृपति रेहां, नयणे पावस मास ॥ ४ ॥ मे० ॥ धूजे नृप धरणी ढले रेहां, खिण खिण होत अचेत ॥ मे० ॥ शीतल वाय झकोलती रे हां, सुंदरि करत सचेत ॥५॥ मे० ॥ नारि सुतारालोचनी रेहां, आंसु लूहे चीर ॥ मे० ॥ कांइ क्रूरो वालमा रेहां, साहिब साहस धीर ॥ ६ ॥ मे० ॥ सुण प्रीतम प्राणेसरू रेहां, अरज हमारी एक ॥ मे० ॥ मुज वेची दमडा जरो रेहां, उन्नी राखो टेक ॥ ७ ॥ मे० ॥ सत्य राखो पीयु आपणो रेहां,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

साहिब सत्य न गमाय ॥ मे० ॥ सत्य राख्यां स बहिं रहे रे हां, सत्य गयां सब जाय ॥७॥ मे०॥ इणि वाते लज्जा नही रे हां, में प्रभु तोरी दास ॥ मे० ॥ चिंता सब दूरे हरो रे हां, वालिम चित्त विमास ॥ ए ॥ मे० ॥ नीर भरुं लज्जा नही रे हां, रांधण इंधण काम ॥ मे० ॥ वासीडुं पण ढुं करुं रेहां, शील न खंमु स्वामि ॥ १० ॥ मे० ॥ तो जायी चंद्रसेनकी रेहां, जो राखुं व्रत शील ॥ मे० ॥ जे में कर तेरो ढब्यो रेहां, एहिज टेक अहील ॥ मे० ॥ ११ ॥ करवत वूही अंगमें रे हां, वचन सुणी हरिचंद ॥ मे० ॥ उंर उपाय कछु नही रेहां, आवी पड्यां दुःख दंद ॥१२॥ मे० ॥ सत्य सुतारा तें कह्यो रेहां, वचन होवे ए सत्य ॥ मे० ॥ शुभ अशुभ नवि जाणीयें रेहां, दैव करे सो सत्य ॥ १३ ॥ मे० ॥ क्षणमांहे प रगट थयो रेहां, झालरनो झणकार ॥ मे० ॥ वाग्य तिहां तिण देहरे रेहां, सूरज उगणहार ॥ १४ ॥ मे० ॥ चोथी ढाल कही इसी रेहां,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बहुत कीया अन्याय ॥ मे० ॥ ऐसा दुःख हरि चंदका रेहां, क्युं करी कहेणां जाय ॥ १५ ॥ मे० ॥ सुखीयां तो माने नहीं रे हां, कनकसुंदर कहे जोय ॥ मे० ॥ सोई सत्य करी मानशे रे हां, जिसने वीती होय ॥ १६ ॥ मे० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नारि वचन प्रमाण करि नृप उठ्यो परभात ॥ पहोतो मारग मांहवी, करम तणे अवदात ॥१॥ सुंदरि शिर मूकी तृणो, इम दाखे तिणि वार ॥ ल्यो कोई उत्तम पुरुष, वेचुं माहरी नारि ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ पांचमी राग धन्याश्री ॥ जोडीडा हंसारे विषय न राचीयें ॥ ए देशी

॥ तव एक ब्राह्मण आयो तिण समे, पूछे नृपने रे सोय ॥ मोल सुणावो रे मुजने नारिनो, लाख मोहर एक होय ॥ १ ॥ नारी वेचेरे हरिचंद आपणी, सहस इग्यारेरे दाम ॥ एआंकणी ॥ सही सूधेरे देशुं एहना, जोठे ताहरे काम ॥ ॥ ना० ॥ २ ॥ राये मान्या दीधा वेगशुं, लेइ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चाल्यो वर नार ॥ तब राजा धसके धरणी ढल्यो, मृतक तणे अनुहार ॥ ३ ॥ तव पटराणी गाढी गाबरी, आघो पग न नराय ॥ पाठी परवस आवी शके नही, वयण न कहेणोरे जाय ॥ ४ ॥ ना० ॥ प्रीतम सामुंरे जोवे पदमणी, बेटो आवे रे लार ॥ ठेडे वलग्यो रें रढ मांमी रह्यो, सुण माता सुविचार ॥ ५ ॥ ना० ॥ साथें ते डोरे मुऊने मात जी, न रहुं राजा पास ॥ व लि देवरावो रे दाम ते महारा, कहे कुमर रो हिताश्च ॥ ६ ॥ ना० ॥ दश मस वाडा उदरें तें धर्यो, दोहिला गर्नावास ॥ वरस दसां लगे सारे ताहरे, के सारे सुर वास ॥ ७ ॥ ना० ॥ पाठा आवो फरी एक वारसुं, ब्राह्मण वेद नंमार ॥ तातनणी समऊावी द्यो तुमें, दश ह जार दिनार ॥ ८ ॥ ना० ॥ ब्राह्मणने मन करु णा उपनी, फिर आयो तत्काल ॥ सुंदर आवी तारालोचनी, मूर्छागत नूपाल ॥ ॥ ए ॥ ना० ॥ राजा ढांव्यो ताढा नीरशुं, विंऊणे वींजे वाय ॥ ह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रिचंद राजा उठि बेठो थयो, धनविण रह्यो विलाय ॥ १० ॥ ना० ॥ जोवा लाग्यो नारि नजर नरी, रोवा लाग्यो ताम ॥ कहेवा लागी तारालोचनी, सुण पीयु आतमराम ॥ ११ ॥ना० ॥ धीर धरो पीयु डा साहस धरो न करो विरह विलाप ॥ लिखियो विधाता छठी रातनो, सुख दुःख सहेशो आप ॥ ॥ १२ ॥ ना० ॥ सांजल कंता को केहनो नहीं, ए संसार असार ॥ नाम संजारो श्रीजगवंतनुं, जवो दधि तारणहार ॥ १३ ॥ ना० ॥ जेम सरजे छे तिम प्रजु थायसी,सुख,दुःख राज जमार॥ लिख्यो लेख शिर कुण टालि शके, जे सरज्यो किरतार ॥ ॥ १४ ॥ ना० ॥ ढाल वैरागनी कही ए पांचमी, राणी आपे धीर ॥ राग धन्याश्री कनकसुंदर कहे, राजा साहस धीर ॥ १५ ॥ ना० ॥

॥ दोहा ॥

॥ बेटो मातने वीनवे, हुं आवश तुम साथ ॥ वली देवरावो दश सहस्स, मोहरपिताने हाथ ॥ १ ॥ वचन सुणी बालक तणां, करुणा मनमें आण ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बाल वीठहो मातने, हुं किम करुं सुजाण ॥ २ ॥
॥ ढाल छठी ॥ रागसारंग मल्हार ॥
देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥
॥ हवे ते ब्राह्मण वीनवे रे, इणिपरे वचन वि
चार ॥ ले हुं देउं तुझने रे, दश सहस दीनार ॥
॥ १ ॥ हैहै गति हरिचंदनी रे, कर्मविटंबण हा
र ॥ है० ॥ एआंकणी ॥ वेच्यो पुत्र महीपति रे,
रमऊमतो रोहिताश्व ॥ पटराणी जोती रही रे,
वालम लील विलास ॥ २ ॥ है० ॥ चाल्यो बा
ह्मण चोपशुं रे, चाल्यो राजकुमार ॥ चाली ता
रालोचनी रे, राजाको जीउ लार ॥ ३ ॥ है० ॥
हीयो न फूटे वज्रनो रे, आज न त्रूटे कांय ॥
प्राण न छूटे पापीयो रे, मुझ तन मन ले जाय
॥ ४ ॥ है० ॥ यतः ॥ मुझ हीयडो अतिहे निठुर,
प्यारी तणे विठोह ॥ फाटी शत खंम होवतो,
तो हुं जाणत मोह ॥ १ ॥ पाणी तणा प्रवाह,
आंखे दीसे आवणा ॥ जाणत हेज हीयाह, लो
ही आवत लोयणे ॥ २ ॥ ढाल पूर्वली ॥ दीशें फिरि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

फिरि देखती रे, जाती रोती नार ॥ रोतें रोयां पंखीयां रे, सघलाही तिण वार ॥ ५ ॥ है० ॥ हो वालिमजी कंतजी रे, हा हा प्राण आधार ॥ कब मुख पेखीश प्रीतमा रे, मन मोहन भरतार ॥ ६ ॥ है० ॥ वनिता पहोती वेगली रे, आडी आवी भींत ॥ धसकेशुं धरणी ढल्यो रे, राय थयो चलचित्त ॥ ७ ॥ है० ॥ लांबी बाह पसारीने रे, मूकण लाग्यो घाह ॥ प्रिया प्रिया मुख उच्चरे रे, विलवंतो नरनाह ॥ ८ ॥ है० ॥ केमें इंगां फोडीयां रे, सरोवर भांजी पाल ॥ के तरु कूंपल तोडीयां रे, तोडी नीली माल ॥ ए ॥ है० ॥ राखी थापण पारकी रे, दीधां कूडां कलंक ॥ माडीशुं पुत्र विछोहीयां रे, के में कीधा वियोग ॥ १० ॥ है० ॥ के परनारी अपहरी रे, के किधी परतांत ॥ के हुं दुष्ट जे पापीयो रे, जीम्यो आधी रात ॥ ११ ॥ है० ॥ के में ब्राह्मण मारीया रे, के में मारी गाय ॥ के में साधु संतापीया रे, के में दीधी लाय ॥ १२ ॥ है० ॥ के में

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

व्रत लइ कापीयां रे, के मारी जूं लीख ॥ के कूडां व्रतमें कीयां रे, के में भांजी दीख ॥ १३ ॥ हे० ॥ के सुत शोक तणा ह्णा रे, के में लीधी लांच ॥ के खट दरसण पोषिया रे, पर मारगमांहिं राच ॥ ॥ १४ ॥ हे० ॥ के पासीगर हुं थयो रे, के में पाडी वाट ॥ के में गुरु जन लोपीया रे, के पाड्या घर हाट ॥ १५ ॥ हे० ॥ के में साप विणासी या रे, बिलमें रेड्यो नीर ॥ भाढ बंधावी जीव नी रे; ते सहु सहे शरीर ॥ १६ ॥ हे० ॥ पाप अघोर कीयां इस्यां रे, कहेतां न आवे छेह ॥ आज उदय आव्या तिके रे, भोगवे प्राणी तेह॥ ॥१७॥ धिग् कमाई माहरी रे, धिग् जीव्यो मुझ आज ॥ नारि विना बेटा विना रे, जीव्यां केही काज ॥ १८ ॥ हे० ॥ कुण जाणे थाशे किस्युं रे, आपद संपद होय ॥ कृत्य कमाइ आपणी रे, होणहारते होय ॥ १९ ॥ हे० ॥ छठी ढाल पूरी थइ रे, कनक सुंदर मुनिराय ॥ विवरी शुद्ध वखाणतां रे, हियडे गर्व न थाय ॥२०॥हे०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ वलि वाजे विरहलहरी, वलि वलि करे विलाप ॥ मन जाणे जइने मलुं, घणुं पठतावे आप ॥ १ ॥ बहु गुणवंती गोरडी, चंद वदन कटि क्षीण ॥ आशालुब्धी साहीधणी, में वेची मति हीण ॥ २ ॥ रे मन दूष्ट दूरात्मा, पापी क्रूर कठोर ॥ तूं किम उडी नां गयो, करी अबलासुं जोर ॥ ३ ॥ हा हवे हुं जाउं किहां, केहसुं करुं आलोच ॥ महोर हजी थाके घणी, सबल पड्यो एम सोच ॥ ४ ॥ वेंची तारालोचनी, वेच्यो रा जकुमार ॥ वेच्यां मंदिर मालीयां, राजऋधि नं मार ॥ ५ ॥ हजीय दंरु आगें लग्यो, करीयें क वण उपाय ॥ के अकर्म करणी करुं, के मुज वाचा जाय ॥ ६ ॥ इम चिंतवतां चित्तमें, सूर गयो पर तीर ॥ श्रीहरिचंद महिपति, उठ्यो साहस धीर॥ ॥७॥ दिन फूरंतां निर्गम्यो, रयणी रोयंति विहाय ॥ सज्जन पाखे जीववो, ते जीव्यो श्योमाय ॥ ८ ॥ किण मंदिर सूतो जइ, आशा लुब्ध निराश ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

खिण जागे खिण विलववे, खिण नाखे निश्वास ॥
॥ ए ॥ चंड़ें कीधो चांद्रणो, राय थयो चलचित॥
मधुरस्वरे मन डुःख जरे, गावे विरही गीत ॥१०॥
दिवसे तूटित तारका, ज्योती जागि असमान ॥
विरही जनके कारणें, चंद चलावत वाण ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ सातमी राग सारंग मल्हार ॥ इणे अवसर तिहां रूंबनो रे ॥ ए देशी

॥ सुण ससीहर एक वीनती रे लाल, तुऊनें कहुं कर जोडि रे ॥ चंदलीया ॥ में वेची वर वा लही रे लाल, लागी सबली खोडि रे ॥ १ ॥
॥ चं० ॥ कहेने संदेशो मोरी नारिन रे लाल, तुं मुज प्राण आधार रे ॥ चं० ॥ क० ॥ तुं सहुने देखे सहि रे लाल, तुजने देखे संसार रे ॥ २ ॥
॥ चं० ॥ क० ॥ हुं सबलो पापी हूउं रे लाल, कीधी घात विश्वास रे ॥ चं० ॥ पुत्र सहित हाथ पारके रे लाल, वेची वेची नारि निराश रे ॥ ३ ॥
॥चं० ॥ सुंदर सुरंगी माहरी रे लाल, माहरी जीवन जीव रे ॥ चं० ॥ रोतां कुण मुज राखशे रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लाल, केही केही कीजे रीव रे ॥ ४ ॥ चं० ॥ वा
लही विरंगी रंगी में तजी रे लाल, मन विलखाणी
नारी रे ॥ चं० ॥ समय प्रमाण कीयो सती रे
लाल, बहु डुःख हीया मझार रे ॥ ५ ॥ चं० ॥
पति ज्ञक्ति महोटी सती रे लाल, शीलवती मन
शुद्ध रे ॥ चं० ॥ हरिणाक्षी पर हब हुइ रे लाल,
मोहन वेलि मन शुद्ध रे ॥ ६ ॥ चं० ॥ ऊर नि
शासा मूकती रे लाल, हियडे विरह प्रकाश रे ॥
॥ चं० ॥ बहुं डुःखें ज्रूपति पूरियो रे लाल, नयणे
पावस मास रे ॥ ७ ॥ चं० ॥ ग्रथिल पणे गीत
गावतो रे लाल, ऊरता निर्ज्झरणां नीर रे ॥चं०॥
चंद्र प्रतें संदेशडो रे लाल, दाखे दाखे डुःख अ
पार रे ॥८॥चं०॥ चंदे मानी वीनती रे लाल, जइने
कह्यो हित जाणि रे ॥ चं० ॥ आंख फरुकणने
अंतरे रे लाल, पाछा दीधा आणि रे ॥ ए ॥चं०॥
सुण राजा कहे चंद्रमा रे लाल, संदेशा सुविचार
रे ॥ चं० ॥ पटराणीयें तुजने कह्या रे लाल, रोति
रोति अबला नार रे ॥ १० ॥ चं० ॥ सुंदरि सं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देशा मोकले रे लाल, प्रीतम प्राण आधार रे ॥
॥ चं० ॥ माहरे मन पीयु तुं वस्यो रे लाल, जिम
चातक जलधार रे ॥ ११ ॥ चं० ॥ सुं० ॥ ब्राह्मण
मूऊने लेइ चल्यो रे लाल, जीत तणे अंतराल रें
॥ चं० ॥ धसकेशुं धरणी ढली रे लाल, मूर्छाणी
तत्काल रे ॥ १२ ॥ चं० ॥ सुं० ॥ विधुर मन थयो
माहरुं रे लाल, कंतडो न दीसे केथ रे ॥ चं० ॥
नीर छांटी चित्त वालियुं रे लाल, उठि बेठी थइ ते
थ रे ॥ १३ ॥ चं० ॥ सुं० ॥ वलि चित्त चेतन
आवियो रे लाल, हा मुऊ वेची नाथ रे ॥ चं० ॥
विरहे विलाप करे इस्या रे लाल, आवी बीजाने
हाथ रे ॥ १४ ॥ चं० ॥ सुं० ॥ ब्राह्मण घरे पो
हती सती रे लाल, रहती शील अखंम रे ॥चं०॥
तुऊने एम कहावीयो रे लाल, पीउ दुःख म कर
प्रचंम रे ॥ १५ ॥ चं० ॥ सुं० ॥ साहसधीर प्रा
णांतमे रे लाल, बंधन बांध्यो ज्युं कोय रे ॥चं०॥
लाख महोर विधें पूरजो रे लाल, जिम मन निर्जय
होय रे ॥ १६ ॥ चं० ॥ सुं० ॥ ढाल सुरंगी सा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तमी रे लाल, गाथा शोले एह रे ॥ चं० ॥ कनकसुंदर कहे सांजलो रे लाल, हवे आगल थयुं जेह रे ॥ १७ ॥ चं० ॥ सुं० ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा हरिचंद साहसी, उठ्यो थयो प्रजात॥ राणी तारालोचनी, जली कही ए वात ॥ १ ॥ सोंपी सागर शेठने, महोर सहस एकवीश ॥ राजा रण मांहे गयो, नदि तीर अवनीश ॥ २ ॥ बेठो तरुवर वासतले, ओडयुं मूल सरूप ॥ अंग वि लेपण धूलनो, जिक्कुक रूप सरूप ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ राग केदारो गोडी ॥ कु मरी जाणुं कारज सीधुं ॥ ए देशी ॥

॥ एक चंडाल तिहां आयो, राजा हरिचंदे बो लायो ॥ करी लंगोटी करमें लाठी, बोले वचन वाणी पण काठी ॥१॥ काल रूप कोपें कलकलतो, गालि देतो बलतो उछलतो ॥ धर्म तणी मति कीधी पाठी, जाल ग्रहिनें आणी माठी ॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दूहव्यो राणो जिम तडके. लघु बालक देखिने जडके ॥ माखी दीले करे गुंजार, कूतरा चितरा आवे लार ॥ ३ ॥ पाप करेजे अति असुहातां, उंढण वस्त्र रूधीरें रातां ॥ अति दुरगंध उठाले अंबर, दीठो श्रीहरिचंद नरेसर ॥ ४ ॥ कहे चंमाल सांजल हुं जाखुं, रही शके तो तुंने हुं राखुं॥ मृतक तणा खांपण नित ग्रहणा, आधी रात म साणमें रहेणां ॥ ५ ॥ मुऊ घरका नित वहणा पाणी, रहेगा तो रहो इम जाणी ॥ मानी वात घरे लेइ आयो, उत्पति चोथो जाग लिखायो ॥ ॥ ६ ॥ काज अकाज करे जगजाणे, घर चंमाल तणे जल आणे ॥ राते मसाण सदा रखवाले, आपणो सत्य किमें नवि टाले ॥७॥ कोरा अन्न तणो आहार, स्नान करिने जिमे एक वार ॥ कुल रीत किमे नवि मूके, सत्य शील साहस नवि चूके ॥ ८ ॥ आराधे जगवंत वीतराग, मनमांहे राखे वैराग ॥ ए संसार असार अपार, दुःख अनेक तणो जंमार ॥ ए ॥ कर्म प्रमाणे सुर नर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

खूट्या, कर्म अग्निथी कोइ न बूट्या ॥ कर्मे राम पांम्व वन वासी, कर्मे सुरपति कष्ट प्रकासी ॥ ॥ १० ॥ कर्मे कुबेरदत्ते मात विलसी, हरिचंद नगर विकाणो काशी ॥ कर्मे रावणे सीतापहारी, कर्मे मार्यो जाइ मोरारी ॥ ११ ॥ कर्मे कौरवनो कुल खोयो, कर्म प्रमाणे समुद्र विलोयो ॥ कर्म प्रमाणे रिसह जिणंद, पारणुं न लह्युं जगदा नंद ॥ १२ ॥ पार्श्वनाथने उपसर्ग कीधा,कर्म प्र माणे कमठें दुःख दीधां ॥ कर्मे स्वामी श्रीवर्द्ध मान, बिहुं उदरें आया उधान ॥ १३ ॥ एहवो कर्म तणुं परिमाण, कर्म प्रतें नवि चाले प्राणि॥ चंद सूरज जमता न विलंबे, वलि म्लेछ जे राहु विटंबे ॥ १४ ॥ एह आठमी ढाल सुणाइ, कर्म तणी गति देखो जाइ ॥ मत करशो मनमांहि व डाइ, क्षण एक आपणी होय पराइ ॥ १५ ॥ च उदे चोकडी रावणे हारी, राजा मुंज थयो जी खारी ॥ छोडी गयो रणमें नल नारी, कनकसुं दर कहे वात विचारी ॥ १६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ काल दंरू चंमाल घरे,रहतो इणिपरे राय॥ कार्य अकार्य सहुकरे, हरियो नाम कहाय ॥१॥ कर्म कमाई जोगवे,शुन्न अशुन्न फल जीव ॥ जेह न आवे पापनो, त्यां लगि डुःख सदीव ॥ २ ॥ मन मूरख म म मुंऊतुं, न मिटे सुख डुःख लीह ॥ विण सरज्या मेलो नहीं, ज्यां लगि वांका दीह॥ ॥ ३ ॥ मन संवर करि धीर धर, म कर मिल णरी माम ॥ कुण जाणे कबही वसे,उजड खेडा गाम ॥ ४ ॥ रे मन म करे उरतो, देखी परायुं राज ॥ तड फड मरेसी सिंह ज्युं, सुणि श्राव णकी गाज ॥ ५ ॥ आशा विलुद्धा माणसां, क दिही मिलणो होय ॥ कादव पामी वरजीयुं, जे उर फटणो न होय ॥ ६ ॥ आशा संपें अखय धन, उपकारी जीवंत ॥ पंथि चले देशावरें, व रखां सफल फलंत ॥७॥ गाहा॥ नवरस विलास समये, कंठं गहिऊण मुक्क निस्सासं ॥ सारयणी सो दीहो,तं डुःखं सल्लए हीयए ॥८॥ श्लोक॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विधिना च कृतःश्रेष्टो यो निःश्रासो विनिर्मितः ॥
अर्द्ध दुःखं समं येन, गृह्णीयाद्विरही जने ॥ ए ॥
॥दोहा॥ विरहीजन सहुको मिले,आशाने आधार
॥ मिलण दुहली वल्लही,स्वहस्तें वेची नारि॥१०॥

॥ ढाल नवमी ॥ राग मारु ॥ प्रीत लागी हो कान्हा, प्रीत लागी हो ॥ ए देशी ॥

॥ मिलण दुहेलो हो,वालहि मिलण दोहेलो हो॥ मिलण दोहिलो माननी,नहीं ताने सोहिलो हो ॥ १ ॥वालहि०॥ एक दिन मोकुं सोहना,वर सेज विछाया हो ॥ रंग रमणी गयगामिनी,उरसुं उर लाया हो ॥ २ ॥ वा० ॥ एक दिन आज इस्या नया, सुतां समसाणे हो ॥ सेज बिछाया माजका, मध्यरात्रि मसाणे हो ॥ ३ ॥ वा० ॥ एकदिन मोकुं सोहता, दीवान जुडंता हो ॥ ग यंद पट्टाधर घूमता, आगें मल्ल लडंता हो ॥ ४॥ ॥ वा० ॥ एकदिन आज इसा बन्या, वरते नयं कारि हो ॥ भूतलडे रौद्रामणा, व्यंतरदे झारी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हो ॥ ५ ॥ वा० ॥ एकदिन मोकुं सोहता, सिर छत्र धरंता हो ॥ शूरसुभट आगें खडां, कर जोडी रहंता हो ॥ ६ ॥ वा० ॥ एक दिन आज इस्या नया, शिर धूणंता हो ॥ आगें मृतक बिहा मणां, पहिरा ते दीयंता हो ॥ ७ ॥ वा० ॥ एक दिन मोकुं सोहता, नीसाण घुरंतां हो ॥ चिहुं दिशे चंद्र मनोहरु, वर चमर ढलंतां हो ॥ ८॥ ॥ वा० ॥ एकदिन आज इस्या बण्या, भूति का हुली वाजे हो ॥ जे किरतार स्वयं करे, ते स घलो छाजे हो ॥ ए ॥ वा० ॥ सुख दुःख सही ए आपणा, अनेरासुं न कीजें हो ॥ दे परमे श्वर सींगतो, ते सींग सहीजें हो ॥ १० ॥वा०॥ ढाल कही नवमी नली, मारुणी रागें हो ॥ क नकसुंदर मुनीश्वरें, ए विरचि वैरागें हो ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम विरहातुर भूपति, रहतो एहवी भा ति ॥ एकवार मलवा तणी, पटराणीशुं खांति ॥ ॥ १ ॥ परघर जाइ शके नही, राणी न शके

आय ॥ मनह मनोरथ उपजे, मनही मांहिं स माय ॥ २ ॥ मनकी आशा पूगशे, मिलशे ना रि संयोग ॥ दिन वलियां वलसे सहु, टलसे विरह वियोग ॥ ३ ॥ गाहा ॥ आसा न देइ मरणं, विणा मुयेण न लप्पये पेमं ॥ अवसर जे न मरिजइ, तो लज्जइ सामी सुंदरिहो ॥४॥ आसा समुद्द पडि यं, चिहुंदिसिचाहंति विम्मला नयणी ॥ हे कोइ समद्धो, जो बाह विलंबणं देइ ॥ ५ ॥ दोहा ॥ बाह विलंबण जे दीये, सहुथी ते समरत्थ ॥ र णायर बुडंतडा, कवण पसारे हत्थ ॥ ६ ॥ ध न सो दिन वेला घडी, सुंदरि मुख सुविहाण ॥ निरखिश तारालोचनी, जीवत जन्म प्रमाण ॥ ॥७॥ आशा अमरी अनेक युग, मरि मरि गये ज्युं लाख ॥ पुष्य मरे परिमल रहे, लोक जरे ए साख ॥ ८ ॥ हवे सुणजो राणी तणो, एक मना अधिकार ॥ ब्राह्मण घर जिणि परे रहे, ते विरतांत विचार ॥ ए ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल दशमी ॥ राग वसंत ॥ सुमति
जिणंद जूहारीयें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे राणी ब्राह्मण घरे,रहेती दुःख अपारो जी ॥ श्रीपरमेश्वर ध्यावती, समरंती नवकारो जी ॥ १ ॥ शील सुरंगी चूनडी, सोहे तन शणगारो जी ॥ टीकाकज्जल परिहर्या,सरस तज्यो आहारो जी ॥ २ ॥ हार तज्यो काया तणो, मेखलनो ऊमकारो जी ॥ नवो कंचुक पण परिहर्यो, ज्यां न मिले नरतारो जी ॥ ३ ॥ शी० ॥ गोड्या नेउर वाजणा,कर कंकण न सुहायो जी ॥ तिलक तज्यो वली बहिरखो, हुलडी कंठ रहायो जी ॥ ॥ ४ ॥ शी० ॥ स्नान मज्जन नूखण तज्यां, कुंकल युगल कपोलो जी ॥ राख्यां मंगलिक कारणे, चीर तज्यां रंगरोलो जी ॥ ५ ॥ शी० ॥ काथों पान सोपरडी, पीउ विण रंग न लागे जी ॥ मेंदी कुंकु कमकमा, अंगे अग्नि ज्युं लागे जी ॥ ॥ ६ ॥ शी० ॥ दर्पण दर्शन मुख तणो, राहु ग्रहे मुख चंदोजी ॥ चंद किरण चंदनविना दावानल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दुःख दंदो जी ॥ ७ ॥ शी० ॥ टीकी काजल रा खडी, गोहीरा जिम गाढे जी ॥ परड पाश्ल पग वींठीया, मेखलडी कडि वाढे जी ॥ ८ ॥ शी० ॥ विरहे व्याकुल विरहणी, विरह वसंत रुत व्या पे जी ॥ काया कापडा दरजी ज्युं, कातरणी तन कापे जी ॥ ए ॥ शी० ॥ फूल्या मरवा मोघरा केसु चंपक फूल्यो जी ॥ जाणी दावानल जिस्यो, ज्वालानलनी फुल्यो जी ॥ १० ॥ शी० ॥ देखी सरोवर जल नख्यो, लेतो लहर हलूरो जी ॥ काल भुजंगम फणफटी, मूके फूक फरूरो जी ॥ ११ ॥ ॥ शी० ॥ प्राण पीयारे कंतविना, सविसुख तन न सुहायो जी ॥ कोकिल मोर पपीयडा, दुशमन ज्युं दुखदायों जी ॥१२॥ शी० ॥ उदासीन राणि रहे, लूटे वेणी दंमो जी ॥ जोगिण ज्युं पियुपियु जपे, पाले शील अखंमो जी ॥ १३ ॥ शी० ॥ छठ अठम मास खमण करे, घृत विख जेम वि कारो जी ॥ अरिहंतदेव आराधती, ध्यान धरे नव कारो जी ॥ १४ ॥ शी० ॥ रूप अनुपम सती

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तणो, सूरज ज्योति प्रकाशो जी ॥ एक दिन ब्रा
ह्मण वीनवे, वचन सुणो सुविलासो जी ॥१५॥
॥ शी० ॥ विप्र भणे सुण सुंदरि, परिहर अंग
उदासो जी ॥ मुजसेंती सुख भोगवो, नवरस
भोग विलासो जी ॥ १६ ॥ शी० ॥ दासी किम
तुजने करुं, तुं महोटाघरनी नारि जी ॥ तुं पटराणी
माहरे, भोगव भोग अपार जी ॥ १७ ॥ शी० ॥
सोवन खाट हिंमोलडे, केलि करो मनरंगो जी ॥
मनोवंछित भोजन करो, अंगधरो उछरंगो जी ॥
॥ १८ ॥ शी० ॥ हार मोर मन मानतो, साडी
चीर सिणगारो जी ॥ हुं तुज आपुं करी मया, आ
भरण अधिक उदारो जी ॥ १९ ॥ शी० ॥ रत्न
कनक मणि मुद्रडी, कोडी सवानो हारो जी ॥
तुजने सोहे सुंदरी, हुं तुज शिर भरतारो जी ॥
॥ २० ॥ शी० ॥ तुं मुह मागे जेटली, आणुं
दासी अनंत जी ॥ तप करी काया कां दमो, भांजो
मननी भ्रांतो जी ॥ २१ ॥ शी० ॥ जाणे पावक
घृत तणो, नाम्यो वचन विचारो जी ॥ लागी आग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शरीरमें, शील न खंडुं सारो जी ॥ २२ ॥ शी० ॥
कुवचन ब्राह्मण दुष्टनां,राणी मन न सुहायां जी॥
दशमी ढाल वसंतनी, कनकसुंदर गुणगायाजी ॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन इस्या राणी प्रतें,बोल्यो विप्र विपुण्य॥
दाधा उपर फोफडो, जाणे मेल्यो लूण ॥ १ ॥
राजाने राणी तणा,कर्म तणी गति जोय ॥ एक
एक हुंती अधिक, दुःखमांहे दुःख होय ॥ २ ॥
कुवचन ब्राह्मण दुष्टनां,सुणि दव लागो शरीर ॥
शीयलशुं दृढमन सुंदरी, कहे सुणो वड वीर ॥

॥ ढाल इग्यारमी ॥ राग वैराडी ॥
जलालियानी ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी ब्राह्मण तणारे,कहेवा लागी
एम ॥ वीरा ब्राह्मण ॥ चतुर माणस तुमें एहवा रे,
कथन कहीजें केम ॥ १ ॥ वी० ॥ ए आंकणी ॥
शील न खंडुं काया खंडशुंरे,पडी रे पटोले गांठ
॥ वि० ॥ लोहे लीह पडी जिसीरे, परबति राय
परांठ ॥ २ ॥ वी० ॥ शील सबल हीरा जिस्योरे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नांज्यो न नाजे तेह॥वी०॥ सूरज पलटे उगतो रे, नियम न पलटे एह ॥ ३ ॥ वी० ॥ शी० ॥ सो ने श्याम लागे नहीं रे, रयण न झांखो होय ॥ ॥ वी० ॥ विषधर चंदन वींटीयो रे,वास न मूके तोय ॥ ४ ॥ वी० ॥ शी० ॥ रांधण इंधण हुं क रूं रे, कहोतो आणुं नीर ॥ वी० ॥ कहोतो वा सीडुं करूं आंगणे रे, व्रत न खंडुं मोरा वीर ॥ ॥ ५ ॥ वी० ॥ शी० ॥ एहवां रे वचन उच्चारती रे, कां न पड्यो आकाश ॥ वी० ॥ कां न मुझ त त्काल हूरे, न हुओ प्राण विणास ॥ ६ ॥ वी० ॥ ॥ शी० ॥ तुं मुज बंधव धर्मनो रे,तुं मुज पिताने ठाम ॥ वी० ॥ जो तुं नबु चाहे आपणुं रे, ए हवुं मत दाखे नाम ॥ ७ ॥ वी० ॥ शी० ॥ ए धिक् करणी ताहरी रे, ए धिक् तुज आचार ॥ वी० ॥ वारु त्रिवाडी ताहरो माहाजनोरे, षट कर्म तुजधिःकार ॥ ८ ॥ वी०॥शी०॥ जो तुं करी स हठ एहनो रे,तो मरसुं एकताल ॥वी०॥ सां नली वचन सतीतणां रे,विप्र शिर पडी वज्रता

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ल ॥ए॥ वी० ॥ शी० ॥ वलतोरे विप्र बोल्यो नही रे, लाज्यो हृदय मझार ॥ वी० ॥ धन धन तारा लोचनी रे, शील राख्युं एणी वार ॥ १० ॥वी०॥ ढाल रसाल इग्यारमी रे, वैराडी ए राग ॥वी०॥ कनकसुंदर महिमा शीलनो रे, प्रगट्यो जग सोभाग ॥ ११ ॥ वी० ॥ शी० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलतो ब्राह्मण वीनवे, बेहेनी सुणो मुजवा त ॥ राखो शील नही परे, में तुज परखी मात॥ ॥ १ ॥ ए सघलुं घर ताहरुं, हुं तुज बंधव जे म ॥ में वचने करी दूहवी, खमजो करजो खे म ॥ २ ॥ सति हटकथी कंपीयो, मत हे मुज ने शाप ॥ त्रिविध पणे खमजो वली, लाग्यो मुजनें पाप ॥ ३ ॥ पाप कटे तुज नामथी, शी लतणे अधिकार ॥ में तुज मानी माजणी, ब हिन तणे अनुहार ॥ ४ ॥ इम अपराध खमा वतो, दीठो ब्राह्मण तेह ॥ सति सुतारा लोच नी, धरे धर्मशुं नेह ॥ ५ ॥ सुखे रहे दिन वो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लवे, ध्यान धरे नवकार ॥ दुःक्कर तप करणी करे, शील अखंमित सार ॥ ६ ॥ हरिचंद राय तिहां रहे, तापस लाग्या लार ॥ पण राजा चूके नही, सत्य सबल अधिकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ राग सोरठ ॥ यतणीनी देशी ॥

॥ एक दिवस सुतारा राणी, सहजे मन उलट आणी ॥ वली पुरोहितनी प्रोताणी, गई नरण सरोवर पाणी ॥ १ ॥ पहोती सरोवर अभिराम, तिहां बाग अछे विसराम ॥ शिव निमित्त चंपकनी पांती, लेवा नर यौवन माती ॥ २ ॥ बागमें वीणवा ते आई, हरियो दीयो वेग पठाई ॥ कोइ तोडो रखे वनराइ, कालदंम चंमाल री दुवाइ ॥३॥ चंमाल तणी ए वाडी, देखो जण जाइ उघाडी ॥ आवती दीठी पटराणी, हैहै ए जीवन प्राणी ॥४॥ ठाती नरी दुःख समाणी, रोमंचक आंसु लूहाणी ॥ वलतां मन जाय न वलीयो, टलतां पग जाय न टलीयो ॥ ५ ॥ वरजंतां न जाए वयणे, निरखंता न जाए नयणे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हियडामें हरख न मावे, राणी मन प्रीतम आवे ॥६॥ वलि वेदन विरहे संतापे, घन नयण घटा उर आपे ॥ वलि प्रोहितणी समझावे, दुःख म कर हिवे किस्युं पावे ॥७॥ धन धर्मी बोले कंता, वालेसर तु गुणवंता ॥ मेलशे दैवतो मिलश्यां, दुःख विरह सहु निकलश्यां ॥८॥ धन सो दिन संग सुरंगी, मृगा नयणी त्रिया मनरंगी ॥ चंद्र जाण तणे कुलचंगी, लहस्यां सुख वास अजंगी ॥९॥ निठ निठ निहोरे कीधो, दुजी नारी उलं जो दीधो ॥ राणीने घेर लेई आई, सही सुरू कर जे सहराइ ॥ १० ॥ कहे ए निकली जासे, चं माल प्रीतमनी पासें ॥ केहने पठी दोष म दे जो, पेहलेथी जतन करेजो ॥ ११ ॥ एहनो दी ठो आज तमासो, एक दुःख अने वली हासो ॥ शुं घणा वचनशुं कहीयें, राखीयें तो सोहीरा रहीयें ॥१२॥ बारमी ढाल सोरठ रागे, सुणतां पण मीठी लागे ॥ संपूर्ण खंम कह्यो त्रीजो, रा णीने रखे को पतीजो ॥ १३ ॥ जोतां मति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नासी जाय, जाणहार तिके न रहाय ॥ पुत्री करी विप्रें मानी, ते साच वचने वींधाणी ॥ १४ ॥ आश्वास घणो वलि दीधो, राणी मनहाथें लीधो॥ नावड गछ कमलदिणंद, सुरतरु जेम सुगुरु सुरिंद ॥१५॥ मुनिरत्न नमुं उवझाय, जिणे दीधो अंग उपाय ॥ पादांबुज तास पसाय, कहे कनक सुंदर मुनिराय ॥१६॥ इतिश्री हरिचंद तारालोचनीचरित्रे सत्यशीलाधिकारे स्त्रीपुत्रविक्रय करण सत्यशील सुदृढ करण नवरस वर्णने चतुरसे वर्णननामो तृतीयः खंडः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थखंडः प्रारभ्यते ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइनी ॥ रागमारू ॥

॥ चोथे खंड प्रणमुं ए चार, गुरु गणपति रवि ब्रह्म कुमार ॥ सरस चरित्र कहीश उपगार, श्री हरिचंद तणो अधिकार ॥ १ ॥ हवे अयोध्यो नगरी तिहां, दिव्य रूप तापस छे तिहां ॥ पूरव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वैर रायशुं रोष, दाखे छल बल मन धरि शोष ॥२॥ तो पण सत्यवादी नूपाल, नाम गाम कुल गोपवि काल ॥ अकल अबीह थको अणजीत, सत्त न खंके राय वदीत ॥ ३ ॥ तापस मनमांहे चिंतवे, एक सबल छल करवो हवे ॥ तिणे छले अफग रहे जो एह, तो सत्यवंत नहि संदेह ॥४॥ श्लोकः राज्यं दत्तं धनं दत्तं, सत्यं शीलं नखंफितं॥ हरिश्चंद्रसमो त्यागी, न नूतो न नविष्यति ॥५॥ चोपाइ ॥ मुखक नासे देखी मंजार, नकुल देखी नासे विषधार ॥ सिंह देखी मृग नासे जेम, श्वान देखी हुड कंपे तेम ॥६॥ देखी सीचाणो उडे चडी, तिम एहनो सत्त न रहे घडी ॥ अम रूठे अविहड सत्त रहे, तो सुरपति न्याही गुण कहे ॥७॥ जोशुं एहना सत्यनी वात, वली खेलशुं बहु परें घात ॥ एम सबल उुःख देवा नणी, उुष्ट बुद्धि कीधी मन तणी ॥८॥ चोथा खंफनी पहेली ढाल, सुंदर मारू राग रसाल ॥ कनकसुंदर कहे एह वृत्तांत, सत्य न चूके ए सत्यवंत ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल बीजी ॥ राग आशावरी सिंधु ॥
विषय न राचीए ॥ ए देशी ॥

॥ हवे तापस वली आविया रे, काशी नगर मझार ॥ रूप रच्यो ब्राकण तणो रे, मारे पुरुष अपारो रे ॥१॥ कर्म न बूटीयें, कर्म विटंबण हारो रे ॥ कहो कीजें किस्युं, सुख दुःख होये संसारो रे ॥ कर्म० ॥२॥ ए आंकणी ॥ तापस तेहिज पापीया रे, मारे लोक अणंत ॥ हाहाकार हूउं घणो रे, लोक हूआ जयभ्रांतो रे ॥ कर्म० ॥३॥ राजा पडह वजडावीयो रे, ब्राकणी जाले जेह ॥ तव निश्चें हुं तेहने रे, मुह माग्यो द्युं तेहो रे ॥ कर्म० ॥४॥ ते तापस ब्राकणि विद्या रे, मंत्र तंत्र अछेह ॥ वली आया मंत्री कन्हे रे, मंत्रवादी हूआ तेहो रे ॥ कर्म०॥५॥ होम अगर मलयागिरि रे, बेठा करवा ध्यान ॥ रायें कह्यो आणो इहां रे, जे जग नोख नवीनो रे ॥ कर्म० ॥ ॥६॥ ॐ ह्रीँ ह्राँ ह्रुं मंत्रे जपे रे, अष्ठोत्तर सत्त

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वार ॥ आमा पडदा बांधीया रे, तिल घृत होम अपारो रे ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ सति सुतारा लोचनी रे,करी माकिणनो वेश ॥ हाथ बुरी रुधिरें नरीरे, आणी पास नरेसो रे ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ तेडाव्यो राजा तिहां रे,कालमंम चंमाल ॥ हरियो पणसाथें अछे रे, दीसंतो विकरालो रे ॥ कर्म० ॥ ए ॥ राय कहे चंमालने रे,मुंमो एहनो शिश ॥ खर च डावी सूली धरो रे, जय जय तुं जगदीशो रे ॥ ॥ कर्म० ॥ १० ॥ कालदंम हरिया प्रते रे, हुकम कीयो अविनीत, ए माकणने जालीने रे, माथो मुंमि तुरंतो रे ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ एह तो माहारी नारी छे रे,सतीय शिरोमणी सार ॥ पापी पैशून्य विचें पडी रे, कर्म नडिया निरधारो रे ॥ कर्म०॥ ॥१२॥ चंडनाणनी नंदनी रे, अबला नारी अ नाथ ॥ सती तणो शिर मुंमतां रे, किम वहे मा हारा हाथो रे ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ तदपि हरिये मुख हाजणी रे, वचन कीधुं परिमाण ॥ काम एह चांमालनुं रे,में करवो निरवाणो रे ॥कर्म०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १४ ॥ बीजी ढाल पूरी कही रे, आशा सिंधु नाख ॥ हियडो नृपनो कल कले रे, जिम सू रज वैशाखो रे ॥ कर्म० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥इणे अवसर देशांतरी,आयो एक नृपपास॥ करी सुपंखी नेटणुं, बोले वचन विकाश ॥ १ ॥ एक वचन नृपनुं हुवुं, दोय वचन वलि धीर ॥ त्रिहुं वचने कारज तणी, क्षण नवि होवे धीर ॥

ढाल त्रीजी राग केदारो गोडी ॥ सुण मोरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर वात हमारी रे, मुजने सबली आश तुमारी रे॥ साचो दाखुं वचन विचारीरे, कूड न बोलुं राज दुवारी रे ॥ सु० ॥१॥ जाति हुं ब्राह्मण निर्धन दुःखीयो रे, माया विण नर नहि सुखीयो रे ॥ माया विण निःस्वारथ ना री रे, नीकली जाये स्वछंदा चारी रे ॥ सु० ॥२॥ मान न दीये कोइ विण माया रे, पीडे सज्जन कुटुंब सखाया रे ॥ सुरू महेल न होये गज घो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

डा रे, पूगे नहि मनोरथ कोडा रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ माया विण निंद न आवे रे, मृग नयणी पण निंद निवारे रे ॥ प्रीतम प्राणी विना धन पहिडेरे, वल्लभ पुत्र कलत्र घणुं विहडे रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ तिण कारण मुझ नारि संतापे रे, जइ परदेश धन कांइ न ल्यावे रे॥आलसुआने लखमी किहाथी रे, विण उद्यमे धन मिलतुं नथी रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ हाथ पग नांजी जे रहे बेठा रे, ते नर न्यायें जाणो हेठा रे ॥ वचन पडुत्तर देवा शूरो रे, गीत नाषित पंमित पूरो रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ विदेशे जइ विद्या चलावो रे, देश नला ढे मोहन मलवो रे ॥ मालवे जइने रहेजे पीयुडा रे, लोक नलां ढे तिहांनां रूडां रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ द्रव्य उपजावी वहेला आजो रे, घणा नगरनां शालु लाजो रे॥ वाटडी तुमारी हरि फरि जोती रे, मुजनें आण जो गजने मोती रे ॥सु०॥८॥ सुंदर नांतिनुं आणजो रूडो रे, चंद्र वदनीने योग्य जे चूडो रे ॥ प्राण वल्लभ वीनति अवधारो रे, नकवेसण ला

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वजो न्यारो रे ॥ सु० ॥ ए ॥ अबला माटे बहुध न याची रे, आणशो जाणशुं प्रीतम साची रे ॥ तुम विण साहेब निंद न आवे रे, प्राण पीयारा अन्न न भावे रे ॥ सु० ॥ १० ॥ कांता माता पिता परिवार रे, कंत विठोहो करे वली नार रे ॥ स बल सुख धनथी लहीयें रे, धनविण पीयुडा बहु दुःख सहियें रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ इम ब्राह्मणीयें मुऊ प्रतिबोध्यो रे, में पण हियडामांहे शोध्यो रे ॥ वचनविशेषे नारी समजायो रे, मुज मन मांहे उद्यम आयो रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ तिण कार ण हुं घेरथी चाल्यो रे, हलवे हलवे मारग हा ल्यो रे ॥ आगें एक महावन आयो रे, भूख ला गीने थयो तृषायो रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ गाथा ॥ लवण समो नथी रसो, विन्नाणसमो विधानो नथी ॥ मरण समो नथी भयं, क्षुधा सम वेयणा नथी ॥१॥ ढाल पूर्वली ॥ बारे कोश अटवी नदी गंगा रे, निर्मल नीर लहेर तरंगा रे ॥ स्नान करी निर्मल जल पीधुं रे, पावन तन राजन में कीधुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ कैवच कांटामांहे विलझो रे, में दीठो शुक पंखी अलुझो रे ॥ उडी न शके पांख अलुजाणी रे, लागी जाल जिहां लपटाणी रे ॥ सु०॥१५॥ एक वार जो जावुं जीवा रे, इण वन कदीय न आवुं सूवा रे॥भूलो चूको कदेही जो आवुं रे, लटकण फल कदेही न खावुं रे ॥सु०॥१६॥

दोहा ॥ में जाण्यो चंदन बडो, बेठो घाली बाथ ॥ सुकी रुखी सुही जणो, वली न घालुं बाथ ॥१॥ सुरतरु जाणी सेवियो, भमरो बेठो आय ॥ सुतो तिहां किणे लोभीयो, पांख रही लपटाय ॥२॥ रे केशु म म गर्व कर, मुझ शिर भमर बइठ ॥ मालति विरहें विखोहियो, पावक जाणी पइठ ॥३॥

॥ ढाल ॥ यतन करी में तिहांथी लीधो रे, पांख समारी सुसतो कीधो रे ॥ हाथ ग्रहीने पंख समारी रे, इणी परें एहनी देह उगारी रे ॥ सु० ॥ ॥ १७ ॥ नीरशुं छांटी प्रफुल्लित कीधो रे, साथु आनो मोदक दीधो रे ॥ दया उपर नही धर्म अनेरो रे, पर जीव सरिखो आप केरो रे ॥सु०

॥ १८ ॥ श्लोक ॥ कृपानदीमहातीरे, सर्वे धर्मा स्तृणांकुराः॥ तस्यां शोषमुपेतायां, किंपुन स्ते तु नं दति ॥१॥ सर्वशास्त्रमयी गीता, सर्वदेवमयोहरिः॥ सर्वतीर्थमयी गंगा, सर्वधर्मोदयापरः ॥२॥ ढाल ॥ जीव दयायें कर ग्रही लीधो रे, मारग चाल्यो कारज सीधो रे ॥ जिहां पंखी कहे तिहां मूकुं रे, ए वचन छे ठाम न चूकुं रे ॥ सु० ॥ १ए ॥ पंखी बोल्यो अमृत वाणी रे, जीव दान दीयो वड दानी रे ॥ तुजशुं केम उंसींगण थाउं रे, पण एक सूधो मर्म बताउं रे ॥ सु० ॥ २० ॥ काशी राजाने नेट करेजे रे, लाख टकानी कांग णी लेजे रे ॥ तिण कारण तुम पासें आण्यो रे, हवे करशो आपणो जाण्यो रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ वली शुक पंखी साख नरेसी रे, पिंगल नरह तर्क नणेसी रे ॥ लीधो पंखी नृप उडरंगे रे, राजा पूढे निज मन रंगे रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ नी ले वरणे शुक नयणे निरख्यो रे, राजा मनमांहे गाढो हरख्यो रे ॥ तीखी चांच चंचल चतुराइ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, अंग सकोमल दल सुखदायी रे ॥सु०॥२३॥ राता पग नख लोचने रातो रे, घणा पद विशेषें गातो रे ॥ हसि हसि पंखीने जुए नर राया रे, कहो शुक पंखी वचन सुहाया रे ॥ सु० ॥२४॥ सांभल स्वामी साचुं हुं भाखुं रे, जे जे पूछो ते ते दाखुं रे ॥ पण ब्राह्मणने में देवराव्या रे, लाख टका द्यो एहने राया रे ॥ सु० ॥ २५ ॥ यतः ॥ शठं प्रति शठं कुर्यात्, आदरं प्रति आदरं ॥ मया ते लुंचिताः पक्षाः, त्वया मे मुंडितं शिरः ॥ १ ॥ ॥ढाल॥ लाख धन दइ ध्वजने संतोष्यो रे, वस्त्र विशेषें षटरसें पोष्यो रे ॥ आशीष देइ ध्वज घरें चाल्यो रे, पूरण धन लेइ दारिद्र वाल्यो रे ॥ सु० ॥ २६ ॥ हवे शुक पंखी सरस क हेसी रे, राणीशु उपकार करेसी रे ॥ जिम जि म देखे नारी सुतारा रे, तिम तिम पंखी दुःख अ पारा रे ॥ सु० ॥ २७ ॥ नयणे निझरमे शुक रोइ रे, कोइ न जाणे कारण सोइ रे ॥ त्रीजी ढाल संपूर्ण कीधी रे, कनक सुंदर कीर्त्ति प्रसिद्धी रे॥२८॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ हवे शुक पंखी वीनवे, सुण काशीधर राय ॥ ए नारि माकण नथी, मुख दीठां दुःख जाय ॥ ॥ १ ॥ ए सेवक चांमालनु, श्रीहरिचंद नरिंद ॥ हुं मंणी राजा तणो, कर्मे थयो ए फंद ॥ २ ॥ सति सुतारालोचनी, ए हरिचंदनी नार ॥ कर्म वशें परवश पड्यां, पायां दुःख अपार ॥ ३ ॥ सत्य राखण ए नृपति, निश्चल राखण टेक ॥ वेचा णो चंमालने, वेची नारि प्रत्येक ॥ ३ ॥ एहिज तापस पापीया, लागा एहनी लार ॥ राज्य ल इने दंम कियो, ए शिर लाख दीनार ॥ ४ ॥ तो पण राजा साहसी, सत्य राखण सुविशेष ॥ लइ नारि रोहिताश्वशुं, परवरिया परदेश ॥५॥ श्लोक॥ राज्यं यातु स्त्रीयां यांतु, यांतु प्राणाअपि क्षणात् ॥ एका एव मया प्रोक्ता, वाचा मा यातु शाश्वती ॥ ॥ ६ ॥ दोहा ॥ सत्य राखे थिर संपदा, सत्य गयो पत जाय ॥ सत्यकी दासी संपदा, बहुरी मिलेगी आय ॥ ७ ॥ साहसीयां लछी मिले, नहु का

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

यर पुरिसेह ॥ काने कुंमल रयण मय, नयणे काजल रेह ॥ ८ ॥ शूरा ने सत्यवादीया, धीरा एक मनाह ॥ दैव करे तस चिंतडी, वांछित फलशे त्यांह ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग केदारो ॥ हांजा मारूना गीतनी देशी ॥

॥ वेची तारालोचनी, राजा वेच्यो राज कुमार ॥ वेच्यां मंदिर मालियां, राजा राज्य ऋद्धि नंमार ॥ धन सत्य धारीरे, नूपति शील समो नहीं कोय ॥ १ ॥ धन० ॥ ए आंकणी ॥ सत्य अखंमित नूपति, राजा इण विध रहे उदास ॥ हुं मंत्रि हरिचंदनो, राजा सुण नूपति सुविलास ॥ धन० ॥ ॥ २ ॥ इणे मुज तापस पापीए, राजा कीधो पहेलो कीर ॥ तिण कारण तुमने कह्यो, राजा ए वृत्तांत गुण हीर ॥ धन० ॥ ३ ॥ कर्म रूलावे जीवने, राजा आपे दुःख अनंत ॥ पूर्व नवनां जे कीयां, राजा दुष्कृत कर्म दुरंत ॥ धन० ॥ ४ ॥ तापस पण नासी गया, राजा सुणी शुक वचन सुरेख ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राजा मन अचरज थयुं, राजा इस्यो अचंभो देख ॥ धन० ॥ ५ ॥ राय कहे दीसे नहीं, राजा मंत्रवादी ते कोइ ॥ सभा सकल संशय पडी, राजा हमणा हूता सोइ ॥ धन० ॥ ६ ॥ वली सुक पंखी वीनवे, राजा जो ए सती संसार ॥ करडी धीजज हुं करुं, राजा जलती जलण मझार ॥ धन० ॥ ॥ ७ ॥ राजा मन कौतुक थयुं, राजा जल ज लता अंगार ॥ अग्नि जगावी खेरनो, राजा ज्वाला नल जयंकार ॥ धन० ॥ ८ ॥ रवि सामो उभो रही, राजा पंखी बोले एम ॥ जो ए साकिण बे इ हां, राजा तो हुं होजो भस्म ॥ धन० ॥९॥ सती सुतारा लोचनी, राजा ए हरिचंदनी नार ॥ शील वंत गयगामिणी, राजा तो मुऊने जयकार ॥ ॥ धन० ॥ १० ॥ त्यारें तारालोचनी, राजा शुक सुंदर बोली एम ॥ शुडा सुगुरु पंखीया, राजा तु जने होजो क्षेम ॥ धन० ॥ ११ ॥ अर्थ देइ चित्र जानुने, राजा ध्यान धरी नवकार ॥ अरिहंत देव आराधतो, शुडा जिनशासन जयकार ॥ धन० ॥ १२ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रागकेदारामां कही, राजा चोथी ढाल रसाल॥कन
कसुंदर मुनि वीनवे,राजा शुकने मंगल माल॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ तत्क्षण पंखी श्याम धूम, धडधड पड्यो ध
गन्न ॥ पंख समारी पंखीयो, उडी पड्यो अगन्न
॥ १ ॥ जिण वेला शुक पंखीये, कीनो झंपा पात॥
शीतल जल परें कमल दल, थइ असंजव वात ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग परजीयो, जूउं
अगमगति पुण्यनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ ए अधिकाइ देखी तिहां रे, हरख्यो नृप
तत्काल रे ॥ हरिचंदने तेडी कहे रे, तुं महोटो
नूपाल रे ॥ १ ॥ कर्म कमाइ हरिचंद नोगवे रे,
सुख दुःख सरज्यां होय रे ॥ कर्म० ॥ ए
आंकणी ॥ राय पसाय करे तिहां रे, दीउं तुज
आधो राज रे ॥ वलतो हरिचंद वीनवे रे, रा
जथी नथी कोइ काज रे ॥ कर्म० ॥ २ ॥ राजा
कहे महोटो करुं रे, दउं तुऊ माहारो देश रे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हुं तुज आलंबन ग्रही रे, करशुं नगर नरेश रे ॥
॥ कर्म० ॥ ३ ॥ न्हाना महोटा कुण करे रे, कर्म
तणे वश होय रे ॥ हुं सेवक चंमालनो रे, हरि
चंद हुं नहिं कोय रे ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ सती गइ घरे
विप्रने रे, मन धरि अधिक आनंद रे ॥ साथ गयो
चंमालने रे, श्रीहरिचंद नरिंद रे ॥ कर्म० ॥ ५ ॥
लांछन उतर्यो सती तणो रे, सत्य शीयल सुपसा
य रे ॥ श्रीनवकार सदा जपे रे, प्रणमु तेहना
पाय रे ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ सबल सुदृढ राजा साह
सी रे, मंदरगिरि जेम धीर रे ॥ अचल अजंग रा
जा ध्रुव जिस्यो रे, सायर जेम गंजीर रे ॥ कर्म० ॥
॥ ७ ॥ राज गयो विरहो थयो रे, कोइ करे आ
पघात रे ॥ विष खाईने जलि मरे रे, कोइ करे
झंपापात रे ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ को थाये घहेलो बा
वरो रे, को थाये योगी अवधूत रे ॥ पण सत्य
राखण कारणे रे, अडिग रह्यो अद्भुत रे ॥कर्म०॥
॥९॥ सेज सुखासण बेसतां रे, सोवन खाट पलंग
रे ॥ ते राजा नदीयां वसे रे, आज उघाडे अंग रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ कर्म० ॥ १० ॥ पांचमी ढाल राग परजीयो रे, कन कसुंदर मुनि राय रे ॥ जंपे यश कर जोडीने रे, धन धन हरिचंद राय रे ॥ कर्म० ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस रजनी समे, नदी तीर हरिचंद॥ बेठो राखे साहसी, मृतक मसाण नरिंद ॥ १ ॥ नारी रोती वल वले, श्रवण सुण्यो वड वीर ॥ कुण रोवे किण कारणे, ऊठ्यो साहस धीर ॥२॥ सती सुतारा लोचनी, पुत्र मरण विषवाद ॥ मृतक लेइ आवी तिहां, रोवे लांबे साद ॥ ३ ॥ आधी रातें आरडे, अबला विषमे ठाम ॥ जीणे स्वर रोवे घणुं, लइ लइ सुतनुं नाम ॥ ४ ॥

॥ ढाल छठी ॥ राग मल्हार ॥ सांइ साचलो हो ॥ अथवा देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ रयण उमाडयुं माहरो रे, दया न कीधी रे दैव ॥ अबला दुःख सबले पडी रे, उडी न जाये रे जीव ॥१॥ कुमर सुलक्षणा हो, मुख बोलो रोहिताश्व, विषमीवेला नंदनां रे, कीधी माता निरा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

श ॥ कुम० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ रयण न लाजे रं
कने रे, वानरने गले हार ॥ घेली माथे बेडलुं
रे, रहे केती एक वार ॥ कुम० ॥ ३ ॥ पंख वि
हुणी पंखणी रे, कां सरजी किरतार ॥ अधविच
राखी एकली रे, है है सरजणहार ॥ कुम० ॥४॥
काया गढ मुऊ विग्रह्यो रे, वाग्यां विरह निशान ॥
घट चढियो मुज घरणणे रे, उडी न जाये रे प्राण
॥ कुम० ॥ ५ ॥ तुं मन रंजन नंदना रे, तुं मुज
जीवन प्राण ॥ उंची चढी नीची पडी रे, सुंदर
पुत्र सुजाण ॥ कुम० ॥ ६ ॥ मुखलडे मन मोह
तो रे, हसतो करतो हेज ॥ सुंदर नूर किहां ग
युं रे, ताहारूं सूरज जेवुं तेज ॥ कुम० ॥ ७ ॥
आडो करीने आवतो रे, हुं लेती उछरंग ॥ मोदक
मीठा मागतो रे, रमतो जमतो रंग ॥ कुम० ॥
॥ ८ ॥ उगो पुत्र उतावला रे, परवरिया परदे
श ॥ विरह थयो जरतारनो रे, पहोता दुःख अ
शेष ॥कुम०॥ए॥ तुं मुज हार हीया तणो रे, कि
रण तपे जिम सूर ॥ उगी मलो हंसी हेजशुं रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कीधो अधिक असूर ॥ कुम० ॥ १० ॥ है है वज्र माहारो हीयो रे, पत्थरथी परचंम ॥ धरणी शरणे सुत पोढतां रे, न हुवो खंमो रे खंम ॥ ॥कुम०॥ ११ ॥ तुं मुज जीवन जीवनो रे, निराधार आधार ॥ अंधानी जेम लाकडी रे, तुं कुल थंन्न कुमार ॥ कुम० ॥ १२ ॥ नयण कमलदल न्हा नडां रे, कोरु रह्या तुज केड ॥ आंख तणी बिंदी जिस्यो रे, वसति उजड वेड ॥ कुम० ॥ १३ ॥ हुं डुर्नागिणी जाउं किहां रे, डुःख नरपूर प्र काश ॥ चंद्र सूर्य त्रूटी पड्या रे, ठटकी पड्यो रे आकाश ॥ कुम० ॥ १४ ॥ त्रण्य नुवन नेलां थयां रे, धरणी हुइ निराधार ॥ तुं मुऊने मूकी गयो रे, प्राणाधार कुमार ॥ कुम० ॥ १५ ॥ इणी परें बहु डुखें जूरती रे, अबला हुइ रे अश्वास ॥ गाढे स्वरें रोई रही रे, नाखी रही रे निश्वास ॥ ॥ कुम० ॥ १६ ॥ दिवस निगमशुं किणी परे रे, अबला हुइरे अचेत ॥ विरह लहेरी वागी घणुं रे, है है मोहनी हेत ॥ कुम० ॥ १७ ॥ सुणी राजा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाछो वळ्यो रे, पटराणीनो साद ॥ रोहीताश्व मुउं सही रे, राय करे विषवाद ॥ कुम० ॥ १८ ॥ है है कर्मगति माहरी रे, विषद विषाद विनाण ॥ दुःख मांहें दुःख संपनां रे, दैव करे ते प्रमाण ॥ ॥ कुम० ॥ १९ ॥ शुं रोवुं शुं आरडुं रे, किणशुं करुं रे पोकार ॥ कुण दुःख जाणे माहरुं रे, जे रूगो किरतार ॥ कुम०॥ २० ॥ ढाल छठी इणीपरें कही रे, विरही राग मलार ॥ कनकसुंदर कहे सांजलो रे, हवे आगें अधिकार ॥ कुम ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणी राजा पाछो चव्यो, तेणी वारें तत्काल॥ बालक एक बांध्यो अछे, वट तरुवरनी माल ॥ ॥ १ ॥ दीगे महिपति वलवतो, मुख करतो पोकार ॥ रे रे मुजने मारशे, योगी रूगो अपार ॥२॥ को जायो तिथि चांदणी, को नर छे निरबीक॥ पर उपकारी को पुरुष, छोडावो साहसिक॥३॥ ॥गाहा॥ मुक्तिस्त्रीवशीकरणं,करणं परोपकारस्य॥ अनशनविधिनामरणं, स्मरणं च जगवता मस्ति॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल सातमी ॥राग केदारो ॥ जुंबखडानी देशी ॥

॥ माले बांध्यो वलवले रे,सुंदर बालक एक ॥ मरुं रे मातजी ॥ शूरवीर कोइ साहसी रे, ठे को ई सुविवेक ॥ मरुं० ॥ १ ॥ सातदिवस परण्या थयां रे, सुख दीठो नहिं कोइ ॥ मरुं० ॥ एकज पुत्र मावित्रनो रे, अवर न दूजो होइ ॥ मरुं० ॥ ॥ २ ॥ राजपाटनो हुं धणी रे, काशीधरनो पुत्त ॥ मरुं० ॥ सूतो आण्यो सेजथी रे, भूत भस्म अ वधूत ॥ मरुं० ॥ ३ ॥ तेल कढाइ उकले रे, हो म करशे ए मुज ॥ मरुं० ॥ मरण सही इहां आ वियो रे, किणशुं कीजें गुह्य ॥ मरुं० ॥ ४ ॥ रा जा हरिचंद चिंतवे रे, एह करुं उपकार ॥मरुं० एह संकटथी छोडवुं रे, सुंदर राजकुमार ॥ मरुं० ॥ ५ ॥ वृद्ध चढ्यो ते साहसी रे, बंधन छोड्या तास ॥ मरुं० ॥ आप बंधायो भूपति रे, तिणे स्थानक दृढ पास ॥ मरुं० ॥ ६ ॥ रंज्यो कुमर घ रें गयो रे, जाइ मळ्यो मावित्र ॥ मरुं० ॥ सबल कष्टथी उगर्यो रे, वात कही सुविनीत ॥ मरुं०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ७ ॥ काशीधर पूछे कहो रे, बेटा निज अधिकार ॥ मरुं० ॥ कोण उपकारी एहवो रे, जिणे कीधो उपकार ॥ मरुं० ॥ ८ ॥ धन्य जन्म जग तेहनो रे,धन पिता धन मात ॥ मरुं० ॥ पुरुष रतन जग जाणीयें रे, वसुधा मांहे विख्यात ॥ ॥ मरुं० ॥ ए ॥ जे सेवक चांगालनुं रे, हरियो नाम कहाय ॥ मरुं० ॥ तिणे मुजने तिहां थकी रे, छोड्यो कर्यो उपकार ॥ मरुं० ॥१०॥ सातमी ढाल सोहामणी रे, राग भलो केदार ॥ मरुं० ॥ कनकसुंदर कहे सांभलो रे, सरस कथा सुविचार ॥ मरुं० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर आव्यो तिहां, जोगी ते अवधूत ॥ दीसे अतिही बिहामणो,जम्म जयंकर भूत ॥१॥

॥ ढाल आठमी ॥ राग गोडी ॥ बे कर जोडी ताम रे, जडा वीनवे ॥ ए देशी ॥

॥ आव्यो ते यमदूत रे, भूत जयंकर,दीसे अतिही बिहामणो ए ॥ महोटा दांत दुर्दंत रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

काल कृतांतनां, रौद्र रूप रौद्रामणो ए ॥ १ ॥ रुक रुक वाजे राक रे, गाढो बड बडे, भूत भयं कर हूक दे ए ॥ मण बाले तिहां तेल रे, होम क रण भणी, अग्नि कढाव्यें उकले ए ॥ २ ॥ जर मर जरमर जटराल, खेचर भूचरा, सोर करे अ ति बडबडे ए ॥ भूख्या पेट भाडंग रे, खाउं खा उं करे, अंगारा भक्षण करे ए ॥ ३ ॥ धूंधूंकार अपार रे, धडहडता धसे, मुखमां ज्वाला नीसरे ए ॥ काला काल कराल रे, निरुर निशाचरा, दंत घरटी ज्युं ते दले ए ॥ ४ ॥ धडधड धुजे अंग रे, गूमा लडथडे, नागा भूगा भड हडे ए ॥ विषम रूप विकराल रे, अग्नि उगालता, दह दिशि दोडे दडवडे ए ॥ ५ ॥ सड सड वाजे शोक रे, पेट आ मिष भरे, हलफल उंचा उछले ए ॥ लागा पेट पायाल रे, लोयण काबरां, छल करता कायर छले ए ॥ ६ ॥ आवे अति दुर्गंध रे, आमिष ए हवा, व्यंतर वेग विकारीया ए ॥ योगी आवे ते थ रे, हरिचंद छे जिहां, बावन वीर हकारीया ए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ७ ॥ तोड्यां बंधन तास रे, छोड्यो तत्क्षणे, श्रीहरिचंद महीपति ए ॥ उतार्यो नरनाथ रे, बोल्या बूमनो, म म शंके तुं शुभमति ए ॥ ८ ॥ अग्नि कडाइ मांहे रे, सुण हो मानवी, होम करीश हुं ताहरो ए ॥ तुं छो लक्षण बत्रीश रे, वि श्वा वीश ए, कारज सिद्धकर माहरो ए ॥ ए ॥ तुं हवे तहारे हाथरे, कापी कापी करी, तन काढी दे आपणो ए ॥ म करीश विलंब लगार रे, वार लागे घणी, आरंभ में मांड्यो घणु ए ॥ १० ॥ बु गदो दीधो हाथ रे, श्रीहरिचंदने काया काटे भूपती ए ॥ मनमां न आणे शंक रे, निकलंक स त्यवंतो, सबल साहस छत्रपती ए ॥ ११ ॥ का ट्यो दाहिण हाथरे, वामा हाथशुं, मन प्रमोद अधिको धरी ए ॥ जंघ चरण पण दोय रे, का ट्या आपणा, दे तेहने तिलतिल करी ए ॥१२॥ काटण लागो जाम रे, मस्तक आपणो, ख्याल एक आव्यो तिसें ए ॥ रोवे सरखे सादरे, दुःख नर जंबूको, तापस पण प्रगट्या इसें ए ॥ १३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धमधमता धखराल रे,तेहि जंबूमनो,अग्नि कडाह मांहे धसे ए ॥ तिणे वेला तत्कालरे,बूम न बापडो, सोवन पुरिसो उपनो ए ॥ १४ ॥ ए ए श्री हरि चंदरे, तापस इम कहे, धन्य धन्य सत्य राजा तणोए ॥ दीधो दुःख अनंत रे,ए चूके नही,शील सत्य साहस घणुं ए ॥ १५ ॥ संरोहणीतत्काल रे, आणी औषधी, सज्ञा करयो लेपन करी ए ॥ अंगोपांग सुचंगरे, नवपल्लव थयां, सुर पहोता अमरा पुरी ए ॥ १६ ॥ पुण्य तणे परिमाण रे, पुरिसो सोवन तणो, सिद्ध थयो, हरिचंदनो ए॥ सत्य दाख्यो हरिचंदरे, सुरपति आगलें,श्री हरिचंद नरिंदनो ए ॥ १७ ॥ आठमी ढाल रसा लरे, कनकसुंदर कहे, सुणतां मन आनंद घणो ए ॥ सुणजो सकल सुजाणरे, हवे आगल वली, सरस संबंध सोहामणो ए ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिचंद महीपति,पुरिसो राखी प्रस न्न ॥ बेठो जाइ मसाणमें, प्रह उगमतें प्रयल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १ ॥ कालदंम आयो तिसे, क्रोधें कालचं माल ॥ वचन कहे हरिचंदने, वक्रति अति वि कराल ॥ २ ॥ रे हरिया अति वेगशुं,मृतक वस्त्र लइ आव ॥ महोर एक मशाणनी,तरतथी जइने लाव ॥ ३ ॥ चिंतातुर हरिचंद थयो, पुत्र चीरने काज ॥ निश्चें लीधा जोइयें,गयो तिहां नर राज ॥ ४ ॥ कुमर मुउ केम कामिनी,कहो ते सकल विचार ॥ वाडीमां रमवा गयो,सर्प मस्यो निरधा र ॥ ५ ॥ हाहा हरिचंद चिंतवे, विषम कर्म गति एह ॥ दुःख कोण जाणे जे थयो,कहेवा लागो तेह ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ राग सारंग मल्हार ॥ नाहली ये म जाये गोरी रे ॥ ए देशी ॥

॥ राजा हरिचंद वीनवे, राणी वस्त्र कुमरना आपो ॥ गरज अमारे एहनी, राणी बीजी रे वात म थापो ॥ १ ॥ कामिनी द्यो रे कपडां कुमरनां॥ अवसर एहवो रे आज ॥ आजनो दाहाडो रे सुं दर एहवो ॥ कहेतां आवे छे लाज ॥ का० ॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पहेली वेचीरे तुजने वालही, राणी पछी रे वेचा
णा हूं ॥ बेहु बराबर ऊतर्यां, राणी रोष करे जे
णे तूं ॥ का० ॥ ३ ॥ राणी दुःख मांहे दुःख
संपना, राणी मुजने तुजविण जेह ॥ ते मन जाणे
माहरुं, राणी कहे परमेश्वर तेह ॥ का० ॥ ४ ॥
नयन कमल दल सुंदरी, राणी आज निःफल
सवि आश ॥ न्हानडीये मरते वली, राणी आ
शा हुइ रे निराश ॥ का० ॥ ५ ॥ शुं कीजें हो
साहिबा, कंता कर्म तणी गति क्रूर ॥ मुख कहे
तां आवे नहीं, कंता दुःख दीठां जरपूर ॥का०॥
६ ॥ तरता थाग न पामीयें, कंता दुःख सागर
नो पार ॥ ज्युं परमेसर निबंधीयुं, कंता न मटे
तेह लगार ॥का०॥७॥ जारी खमी तुं जामिनी,
राणी तुजमां राग न रोष ॥ महीयल तुं मोहोटी
सती, राणी सघलो माहरो दोष ॥ का० ॥ ८ ॥
ढाल कही नवमी, जली राणी हर्ष घणो मन आ
ण ॥ कनक सुंदर हवे बोलशे, राणी देव आका
शें वाण ॥ का० ॥ ए ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ श्रीहरिचंद महिपति,साहस वंत अनंत ॥ कपडा माग्यां कुमरनां, बोली वाणी निरंत ॥१॥ सुरवाणी बोल्यो इसी, धन धन हरिचंद राय ॥ तुज सम त्रिभुवन को नही,नर किन्नर सुर राय ॥२॥ कुसुम वृष्टि हुई तिहां, वाग्यां जय निशान ॥ देव कहे जय जय शब्द, पाम्या परम निधान ॥ ३ ॥ सुर निज माया फेरवी, सभा मांहे शिरताज ॥ इण विधें बेठो तखत, नयरी अयोध्या राज ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ राग खंजायती ॥ तारे कोडेरे वैदर्भी परणे कुमररे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे हरिचंद महीपती रे, नगर अयोध्या राजो रे ॥ राणो राण दीवानमें रे,आप बिराजे आजो रे॥१॥ राजभोगवे हरिचंद, इणीपरे आपणो रे॥ नगरी कौशल्या आनंद, उत्साह हूउं घणो रे ॥ राज० ॥ ए आंकणी ॥ चारे दिशें चामर ढले रे, राजा प्रजा मन मोहे रे ॥ रा० ॥ २ ॥ केइक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लेइ आवे नेटणा रे, माता मयगल घोडा रे ॥ सत्तावीश अंतेउरी रे, पुत्र कलत्र सजोडा रे ॥ ॥रा०॥३॥ रोहिताश्व मनरंगशुं रे, रमतो रमतो आयो रे ॥ मंदिरमांहे सुंदरी रे, पटराणी सुख पायो रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ पयलागें व्यहारिया रे, मोती माणक ल्यावेरे ॥ याचक जय जय उच्चरे रे, उन्ना राज दुवारें रे ॥ रा०॥ ५ ॥ नगर सहु शण गारीयो रे,सोहव नारी आवे रे ॥ राय वधावे आ पणुं रे ॥ धवल मंगल गीत गावे रे ॥ रा० ॥ ॥६॥ बंदीवान छोडावीया रे, जयजय शब्द जणा वे रे ॥ देशविदेशें आपणी रे,आण तुरत वर्तावे रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ जगमांहे जस वापरे रे, दूर अ वनित निवारे रे ॥ जीव अमारि देशमां रे,धर्म तणी गति धारे रे ॥ रा०॥ ८ ॥ हरिचंद एहवो नीपनो रे, दोलतनो दरबार रे ॥ दान देइ ब्राह्मण नणी रे, जपे जग जयकारो रे ॥ रा० ॥ ए ॥ म तिसागर शुक जे हतो रे, कुंतल सेवक शीयालो रे ॥ देवे मानव ते कीया रे, आवी मल्या नूपालो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ रा० ॥ १० ॥ राजा हरिचंद चिंतवे रे, सुप नांतरमें दीठो रे ॥ जीव पड्यो जंजालमें रे, नृप मन भर्म पइठो रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ ज्ञानी विण जाणे नही रे, कर्म तणी गति कोइ रे ॥ पटराणी पासें गयो रे, हरिचंद हरखित होइ रे ॥ रा० ॥ ॥ १२ ॥ आगल आवी उभी रही रे, बोले अमृ त वाण रे ॥ हरिणाक्षी हसीने मले रे, आवो जी वन प्राण रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ राय कहे सुण सुंद री रे, चित्त भ्रमियो मुझ आज रे ॥ कहोनी ए वातडी किम थइ रे, कहेतां आवे लाज रे ॥ रा० ॥ १४ ॥ थें कांइ जाणो को नही रे, सांभलजो अधिकार रे ॥ दाखे तारालोचनी रे, भ्रम पड्यो भरतार रे ॥ रा० ॥१५॥ चलचित्त राजा साहसी रे, कनकसुंदर सुख लहेसी रे ॥ दशमी ढाल खं भायती रे, सुर सघलो ही कहेसी रे ॥रा०॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ देव एक आव्यो तिसे, जलकत कुंभलाज रण ॥ तेजें सूरज सारिखो, काया कंचन वर्ण ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १ ॥ आवीने ऊनो रह्यो, रत्न मुकुट उर हार ॥ काने कुंम्मल जलहले, सूर ज्युं ज्योति अपार ॥२॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ राग मल्हार ॥ जीहो कुंवर बेठो गोखडे ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो इण अवसर तिहां आवीयो, लाला जनकत कुंम्मल कान ॥ जीहो मस्तकें मुकुट सोहामणो, लाला सुंदर तन सुज्ञान ॥१॥ मही‌पति खमजो अम अपराध ॥ जीहो उुःख विविध परें में दीयो, लाला अधिक करी आबाध ॥मही०॥२॥ जीहो इंद्र सन्नामां एक दिने, लाला बेठो ऊलट आण ॥ जीहो सत्य वखाण्यो ताहरो, लाला में नवी मान्यो जाण ॥ मही० ॥ ३ ॥ जीहो ठलबल करी बहु वेदना, लाला में कीधी सवि एह ॥ जीहो दाय उपाय कीया घणा, लाला तुं नवी चूको तेह ॥ मही० ॥ ४ ॥ जीहो ठेदन नेदन ताडना, लाला पामी तें नर पूर ॥ जीहो कसणी कसी में आकरी, लाला सेना जेम सनूर ॥ मही० ॥ ५ ॥ जीहो प्रतपें तुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दिन दीपतो, लाला अविचल पाले राज ॥ जीहो सुणी हरिचंद मन रंजीयो, लाला देव तणां ए काज ॥ मही० ॥ ६ ॥ जीहो देव गयो देवलोक में,लाला दाखी सघली वात॥जीहो इंद्रें वखाण्यो तेहवो, लाला दीगो धरणीनाथ ॥ मही० ॥ ७ ॥ जीहो अग्यारमी ढाल कही जली, लाला कनकसुंदर मुनिराय ॥ जीहो सांजलतां सुख उपजे, लाला आनंद अंग न माय ॥ मही० ॥८ ॥ जीहो जावडगछें राजीयो, लाला श्रीमणिरत्न मुणिंद ॥ जीहो अनंतकला उवझायजी, लाला निजगछ मांहे चंद ॥मही०॥ए॥ जीहो तस पद कमल प्रसादथी, लाला अविचल बुद्धि अपार ॥ जीहो कनकसुंदर मुनि वीनवे, लाला चतुर्विध संघ जयकार ॥ मही० ॥ १० ॥ जीहो चोथो खंम सोहामणो, लाला नवरस सरस विचार ॥ जीहो विजत्स जय करुणामयी, लाला रौद्र ने शांत प्रचार ॥ ॥ मही० ॥ ११ ॥ इति चतुर्थ खंमः समाप्तः ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ पंचमखंडः प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

हवे बोलुं खंम पांचमो, पंच परमेष्ठी पाय ॥ कर जोमी प्रणीपत्य करुं, पूरण करो पसाय ॥ १ ॥ बहुदिन बहु सुख जोगवी,राजा श्रीहरि चंद ॥ चारित्र लेवा चिंतवे, जो आवे जिणचंद ॥ २ ॥ मनमांहे इछा करे,सुतने सोंपुं राज॥ जो इहां आवे शांतिजिन, सारुं आतम काज ॥ ३ ॥ देह नहीं सुख दुःखनुं, धर्मविण गति न कांय ॥ मुक्तिपंथ लहीयें नही, विण जेट्या जि नराय ॥४॥ जाव रुषीश्वर जूपति,थयो हवे हरि चंद ॥ चारित्र लेवा चिंतवे, जो आवे जिणचंद ॥५॥ मेह वाट मन मोरज्युं,शांतिनाथ जिनराज॥ जोतां आवी समोमख्या, वन उद्याने आज ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग बंगाल, शांति जि
णंद जुहारीयें सुरती महीनाना देशी ॥

॥ इणे अवसर तिहां आव्या, जिनवर जग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दानंद ॥ साधु घणाशुं परवर्या, जगपति शांति जिणंद ॥ देव दुंदुही वाजित्र,वाजे जह्वर नेरी॥ ताल कंशाल अने श्री, मादल नाद नफेरी ॥ ॥ १ ॥ महोटा महोत्सवें राजा, लोकशुं हर्ष ध रेवि ॥ आयुरू छत्र मुकुट, सघलाही दूर करे वि ॥ तीन प्रदक्षणा देइ, वांद्या श्रीजगवंत ॥ राय राणी मंत्रीश्वर, ते बेठा एकंत ॥ २ ॥ यो जन वाणी वखाणे, जाणे अमृत धार ॥ धर्म कथा सांजलवा,बेठी परखदा बार ॥ निज निज जाषायें दाखवे,सहुने श्रीवीतराग ॥ केइ श्रावक व्रत आदरे, केइ चारित्र वैराग ॥ ३ ॥ जलधर बुंद तणी परें, चातक चित्त हरिचंद ॥ सरस व चन रस पावन, करत तृपति नरिंद ॥ राजा श्री हरिचंदजी, कहे करकमलने जोडी ॥ जवजय जंजन जिनवर, जव संकटथी छोड ॥ ४ ॥ कहो जगवन् पूरव जवें, पाप कीया कोण कोडी, बहु विध आपदा जोगवी,लागी सबली खोडि ॥ कहे श्री शांति जिनेसर,नरवर सुण अधिकार ॥ पूर्व ज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वजे कर्म, कीया तस एह विचार ॥ ५ ॥ कर्म प्र
माणे जोगवे,प्राणी दुःख अपार ॥ पूर्वदिशें अम
रावती, नयरी जोयण बार ॥ अमरसेन राजा ति
हां, पाले वरण अढार ॥ पटराणी अमरावती, मं
त्रीश्वर मतिसार ॥ ६ ॥ अतुलीबल अलवेसर,रा
जेसर अवनीश ॥ तेज प्रतापें दिनपति, नरपति
विश्वावीश ॥ एक दिवस तिहां आव्या,दोय जति
गुणवंत ॥ चारित्रीया वैरागी, महोटा साधु महं
त ॥ ७ ॥ ७ मासी तप पारणे, मुनिवर आव्या
तेह ॥ एणे अवसर तिहां जरमर, जरमर वरसे
मेह ॥ नृप अंतेउर मंदिर, गोखतलें पहोंचेय ॥
इरियावहि पडिक्कमवा, उन्ना मुनिवर वेय ॥ ८ ॥
सुरनर किंनीर दिणयर, अथवा पुरिसीह एम ॥
रूषि दीठो राजानी,राणी मोही तेम ॥ सुंदर मं
दिर रूप,पुरंदर सरिखे प्रेम ॥ जोग जोगवुं रूषी
साथें,राणी चिंते एम ॥ ए ॥ दासी साथें ७त्रह,
देइ बोलाया साध ॥ राज जुवने बे आव्या,मुनि
वर अकल अगाल ॥ आगध आवी उन्नी, राणी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बे कर जोड ॥ हाव जाव करी बोली, मुनि पूरो मुऊ कोड ॥ १० ॥ जन्म सफल कर सरिसा, स रस मल्यो संयोग ॥ वर्ष एक तुम ढाना, राखुं विलसो जोग ॥ तुमे तरुण वय यौवन, हुं पण बालक वेश ॥ बीजो को नही जाणशे, राजा न गर नरेश ॥ ११ ॥ प्रथम ढाल पूरी करी, साधु पड्यो जंजाल ॥ इम सुणी मुनिवर पाछा, बाहु लीया तत्काल ॥ राणी आगल दोडी, दीधा म हेल कमाड, कनकसुंदर कहे इणी परें, प्रीत न थाये माड ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राणी बोले रुषि सुणो, मकरो हठ अनं त ॥ बन्ने नही तो एक पण, विलसो जोग महंत॥ ॥ ढाल बीजी ॥ राग कालहरो ॥ रामग्री ॥ रूडा रामजी नगर सूनो इण मेलीरे ॥ ए देशी ॥

॥ साधु कहे सुण माता गंगा, तुं छे मात स मान रे ॥ ताहरे पुत्र थकी अमे अधिका, हठ किश्यो अशमान रे ॥१॥ मोरी माताजी जावाद्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बे साध रे, अमे कवण कीयो अपराध रे ॥ मो० ॥ अमने थाये छे अधिकी बाध रे ॥ मोरी० ॥ २ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ वैरागी अमें बाल ब्रह्मचारी, छांरुयो कुटुंब परिवार रे ॥ रमणी छांरी अमे रंजा सरखी, एह अमारो आचार रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ रन्ने वने रहियें इंद्रिय दहियें, सहियें आतप सीत रे ॥ प्रीत न करियें नव तट लहियें, वहियें चारित्र चित्त रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ काम न जागे, पाप न लागे, व्रत न जांगे हीर रे ॥ जे तुं मागे नही अम आगें, वैरागें मन धीर रे ॥ मो० ॥ ॥ ५ ॥ इंडी बाली नस्म करी नाखी, सुं दीठो कहे मात रे ॥ अमशुं आग्रह करीने एवडो, कांइ विणासे वात रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ अमने देखीने तुं मोही, कारण केउं दाख रे ॥ शील रयण अम पास अनोपम, ते जोइयें तो राख रे ॥ ॥ मो० ॥ ७ ॥ साधु घणुं राणीने समजावे, पण नवि माने तेह रे ॥ नीजे पण पाहाण नवी नेदे, नावे वरसो बारे मेह रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ चो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पडे घडे जिम घांट न लागे, उंन्हे रंग मजीठ रे ॥ तिम मुनिने वचने नृपपत्नी, प्रतिबूझे नंही धीठ रे ॥ मो० ॥ ए ॥ ढाल रसाल कही ए बीजी, कनकसुंदर मुनिराय रे ॥ हाव जाव राणी बहु मांडे, मुनिवर मन न सुहाय रे ॥ मो० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ बोली राणी पापणी, वचन सुणो ऋषि राज ॥ एकंते तुमने लह्या, सही न छोडुं आज ॥ ॥ १ ॥ ऋषी जंपे माता सुणो, चले मेरुगिरि राय ॥ शील अमारुं नवि चले, वातां घणी बनाय ॥ २ ॥ काम लुब्ध कामिनी कहे, राती विषया रस्स ॥ तु मने हुं विण जोगव्यां, छोडु नहीं अवस्स ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ त्रीजी राग सारंग मल्हार ॥

॥ मालाकिहांछे रे ॥ ए देशी ॥

॥ हुं नही छोडुंगी रे ॥ ए आंकणी ॥ नैन न चावत व्रत नमावत, बाह लुवावत रे ॥ राग आलापत यंत्र मचावत, शीस घूमावत रे ॥ हुं० ॥ ॥ १ ॥ आलस मोडत करके काहाडत, उर उ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

घाडत रे ॥ अधर दशन फुनी आप आपने, काम जगाडत रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ नृत्य करत फुनी पाय परत है, साकामातुरी रे॥ कटी तटी देखत कुच पर करधरी, ऐसी आतुरी रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ क्रूर नय दिखावे नैन नचावे, तुमकुं मारुंगी रे ॥ मानोगे जो वचन हमारे, प्रेम वधारुंगी रे ॥ ॥ हुं० ॥ ४ ॥ नीर चीर अंजन मर्दन घुसक, रुषिकुं नांखत रे ॥ विषय महारस मुदरी लीला, क्युं मन राखत रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ साधु महामुनि संवर कीनो, मौन महाव्रत रे ॥ हाव नाव करत बहु त्रीया, कुछ नही नावत रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ मुनि मन मदन पकरी विष जलतें, नेदत नाहीन रे ॥ बारह मेघ त्रीया जर लागी, न नेद तुं पाहन रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥ धन धन ब्रह्मचारी वैरागी, टुक नही नीजत रे ॥ हाव नाव नही बाण काम के, तन नही छीजत रे ॥ हुं० ॥ ८ ॥ त्रीजी ढाल कही संपूर्ण, कनक सुंदर मुनिराय रे ॥ में तिनकुं प्रणाम करत हुं, जे साधु न चलाय रे ॥ हुं० ॥ ए ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

(दोहा)

॥ निष्फल नृपपत्नी तणा, थया मनोरथ ए
ह ॥ करवा लागी कुकूर्ड, डुराचारिणी तेह ॥१॥
मंदिर बार उघाडीया,आव्या नृप जन मांही ॥
जाल्या ते बेहु जती, बांध्या काठी साही ॥ २ ॥
मुनिवर मुख बोल्या नही, मोहकर्म बल मार ॥
राजा आव्यो एटले,रमी वन गहन उदार ॥३॥
वात जणावी रायने, तेडाव्या बे साध ॥ निरप
राध निठुरपणे, दीधी मार अगाध ॥ ४ ॥ बंदी
खाने लइ धस्या, मास एक मुनिराय ॥ एक दि
वस रजनी समे, मुनि पत्नणे सद्याय ॥५॥ राजा
राणी सांजले,सूता मंदिर मांहि ॥ कान देइ एक
चित्तशुं, सुणे घणे उछाहि ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग गोडी ॥ वीरमति
कहे चंदने ॥ ए देशी ॥

॥ साधु कहे निज जीवने,सांजल मन वीर ॥
जोगव पूर्व जवें कीया, ए डुःख जंजीर ॥ १ ॥
कर्म कमाइ आपणी, बूटे नही कोय ॥ सुर नर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कर्मे विटंबीया, चित्त विचारि जोय ॥कर्म०॥३॥
रे मन कर्म विटंबना, मत आणो रोष ॥ कर्म क
माइ प्रमाण ते, केहनो नही दोष ॥ कर्म० ॥
॥ ३ ॥ परदुख देतां सोहिलुं, सविहुनी रीत ॥
आपने सहेतां दोहिलुं, नवी सूधी नीत ॥ कर्म० ॥
॥ ४ ॥ परने पीडा जे करे, नवी पूछे न्याव ॥
संकट पामे साधु ज्युं, अन्याय प्रजाव ॥कर्म०॥
॥ ५ ॥ इम सुणी राजा उठीयो, आव्यो तत्का
ल ॥ छोडाव्या बेहु जती, चमक्यो नूपाल ॥
॥ कर्म० ॥ ६ ॥ पायलागी प्रणिपत्य करे, हुं पा
पी दुष्ट ॥ रुषि मुज मिछामि दुक्कडं, थाउं संतु
ष्ट ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ राणी पण शंकी घणुं, मन
चिंते एम ॥ ए महोटा अपराधथी, हूं बूटीस
केम ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ समकित व्रत बेहु आदरे,
जागो मिथ्यात्व ॥ पाप आलोचे आपणां, त्रिहुं
विध विख्यात ॥ कर्म० ॥ ए ॥ ते राणी तारा
लोचनी, तुं ते हरिचंद ॥ साधु संताप्या तें जी
के, पाया दुःख दंरु ॥ कर्म० ॥ १० ॥ साधु मरी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुर उपना, तापस सुर कोय ॥ तुज दुःख दीधुं जेटलुं, कर्मनी ए गति जोय ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ हरिचंद सुणी एम चिंतवे, साची जिन वाण ॥ संशय नांजे जीवना, सुखनी ए खाण ॥ कर्म० ॥ ॥ १२ ॥ वाणी सुणी नगवंतनी, हैए हर्ष न माय ॥ जाती स्मरणथी लह्युं, पूरव नव राय ॥ ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ कहे हवे चारित्र आदरुं, हरिचंद नूपाल ॥ कनकसुंदर मुनि वीनवे, चोथी ढाल रसाल ॥ कर्म० ॥ १४ ॥ हवे हरिचंद आवी घरे, रोहिताश्वने राज ॥ देईने उत्सुक थयो, चारित्र लेवा काज ॥ कर्म० ॥ १५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ रसीयाना गीतनी ॥ श्री उव झाय बहुश्रुत नमो नावशुं ॥ ए देशी ॥

॥ हरिचंद आव्यो रे मंदिर आपणे, कुमरने सोंप्यो रे राज ॥ मुनीसर ॥ दान देइने तव चारित्र लीयो, धन दिन माहारो रे आज ॥ मु० ॥१॥ वडो रे वैरागी हरिचंद वंदीयें, धन धन करणीरे तास ॥ मुनि० ॥ सत्यवंत संयमधारी निर्मलो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चारित्र पवित्र प्रकाश ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ २ ॥
पंच महाव्रत सूधा आदरे, थयो साधु निर्ग्रंथ
॥ मुनि० ॥ बावीश परिसह दुक्कर ते सहे,
पाले मुक्तिनो पंथ ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ ३ ॥
प्रतिबोधी राणी तारा लोचनी, चारित्र पीयुने
रे साथ ॥ मुनि० ॥ दीधी प्रभु अमृत रस देशना,
केवल आण्यो रे हाथ ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ ४ ॥
चारित्र पाले चतुर महासती, शीयल संयम स
तसंग ॥ मुनि० ॥ पंच महाव्रत पाले परवडां,
मुक्ति सधे मनरंग ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ ५ ॥ ह
रिचंद उग्रविहार क्रिया करे, दुक्कर तपने रे जा
य ॥ मुनि० ॥ काउस्सग्ग साधे मुनि खट मास
ना, उपसर्ग कठिन सहाय ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥
॥ ६ ॥ छमासी पण तारालोचनी, दुक्कर तपह
तपंती ॥ मुनि० ॥ आगे सहती उपसर्ग आरि
या, आठेही कर्म खपंती ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥
॥ ७ ॥ मुनिवर मास छठे हुवे पारणे, आवे अ
योध्या एकवार ॥ मुनि० ॥ दोष बेतालीश मुनि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वर टालता, वहोरता नीरस आहार ॥ मुनि० ॥ ॥ वडो० ॥ ७ ॥ बमासीनुं साधी पारणुं, दोष रहित विहरंति ॥ मुनि० ॥ सरस नीरस गोचरी लेतीथकी, वली बमासीनी खंत ॥ मुनि० ॥ ॥ वडो० ॥ ए ॥ हरिचंद शत्रुंजय जइ संचस्या, काउस्सग्ग रह्या रुषिराय ॥ मुनि० ॥ तिहां पण काउस्सग्ग साधवी आदरे, आठेही कर्म खपाय ॥ ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ १० ॥ वली ते साधवी तारालोचनी, चित्तमें चिंते एम ॥ मुनि० ॥ साधु संताप्या तिण पातकथकी, बूटको थाशे रे केम ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ ११ ॥ राजा पण एहिज चिंता करे, समवाय केवल नाण ॥ मुनि० ॥ त्रिभुवन बिहुंनो तेज प्रकाशीयो, ऐ ऐ पुण्य प्रमाण ॥ ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ १२ ॥ बहु दिन प्रतिबोधी नवि जीवने, मुक्तियें पहोता रे दोय ॥ मुनि० ॥ कनकसुंदर गुण गातां तेहनां, सवि सुखलीला रे होय ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ १३ ॥ पंचवरण कुसुमनी वृष्टि थइ, जय जय विविध प्रकार ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ मुनि० ॥ दौं दौं वाजीरे गगने डुंडुही, गाजंती धनघोर ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ १४ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥ राग केदारो गोडी ॥ सेर सोना की उजली घडीदे चतुर सुजाण ॥ ए देशी ॥

॥ हरिचंदनी चोपाइ, अती नीकी नवरंगी ॥ चंगी चोपाइ ॥ सुगुण होवे ते सांनले, उलट आणी अंग ॥ चंगी० ॥ १ ॥ सरस विसाणो श्रावको, पामीजे विण दाम ॥ चं० ॥ मोहन वेली चोपई, नाम तिस्यो परिणाम ॥ चं० ॥ ॥ २ ॥ खाण रतन हीरा तणी, प्रगटी पुण्य प्र माण ॥ चं० ॥ आदर करजो एहने, मुक्ति त णा फल जाण ॥ चं० ॥ ३ ॥ राग छत्रीशे जू जुआ, नवि नवि ढाल रसाल ॥ चं० ॥ कंठ वि ना शोजे नही, ज्युं नाटक विण ताल ॥ चं० ॥ ॥ ४ ॥ ढाल चतुर म चूकजो, कहेजो सघ ला नाव ॥ चं० ॥ राग सहित आलापजो, प्र बंध पुण्य प्रनाव ॥ चं० ॥ ५ ॥ मरुधरदेश मही पति, जशवंत सबली हाक ॥ चं० ॥ सोजत स

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हेर शोहामणो, नवकोटीनुं नाक ॥ चं० ॥ ६ ॥ जावडगछ गुरु साधुजी, साधु गुणे जंमार ॥ ॥ चं० ॥ शिष्य पटोधर तेहना, शीलवंत सुवि चार ॥ चं० ॥ ७ ॥ उपाध्याय महेशजी, गुरु गौतम अवतार ॥ चं० ॥ मुनिवर महोटा माहा जने, आगम ज्ञान अपार ॥ चं० ॥ ८ ॥ कनक सुंदर शिष्य तेहने, गायो एह प्रबंध ॥ चं० ॥ श्रीहरिचंद नरिंदनो, शांतिनाथ संबंध ॥ चं० ॥ ॥ ए ॥ नवरस जेद जूजुआ, ढाल एगुणचाल्ली श ॥ चं० ॥ जावजेद बहु जातना, विधिशुं वि श्वावीश ॥ चं० ॥ १० ॥ संवत् शोल सत्ताणुवे, शुरू पक्ष श्रावण मास ॥ चं० ॥ पंचमी तिथि पूरो हूउं, श्री हरिचंदनो रास ॥ चं० ॥ ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गाथा साडी सातशें, तिण उपर इगतीस ॥ सांजलतां श्रीसंघने, पूगे आश जगीश ॥१॥ इति श्रीहरिचंद तारालोचनीचरित्रें शीलसत्वाधिकारे पंचमः खंमः संपूर्णः ॥ इति हरिश्चंद्ररास समाप्तः ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org